इकाई 19 समेकित बाल विकास सेवा कार्यक्रम (आई.सी.डी.एस.कार्यक्रम) – एक केस अध्ययन

इकाई की रूपरेखा

19.1 प्रस्तावना

रघु एक छोटे से गाँव में, अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ रहता है। रघु और उसकी पत्नी दोनों दिहाड़ी पर काम करते हैं। रघु गाँव की सरहद पर सड़क निर्माण परियोजना में काम करता है। उसकी पत्नी, शारदा, गाँव के मुखिया के खेतों में काम करती है। उनके तीन बच्चों में से सबसे छोटा बच्चा केवल तीन महीने का है। सबसे बड़ी बेटी, जो अभी सात वर्ष की भी नहीं है, अपनी छोटी बहन और एक चार साल के भाई की देखभाल करती है। एक दिन, जब शाम को शारदा गाँव के नल पर कपड़े धोने गई, तो उसे वहाँ उत्तरा बाई मिली। उत्तरा तीन महीने से गाँव में नहीं थी और केवल एक महीने पहले ही घर वापस आई थी। शारदा यह जानना चाहती है कि इतने महीनों से उत्तरा कहाँ गई हुई थी।

उत्तरा : "मैं प्रशिक्षण के लिए उन्नाव गई हुई थी।"

शारदा : "प्रशिक्षण ? कैसा प्रशिक्षण ?"

उत्तरा : "ऐसा है कि मुझे आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के रूप में काम करने के लिए चुना गया है और यह सीखने के लिए कि मुझे आँगनवाड़ी में क्या करना होगा, मुझे प्रशिक्षण दिया गया।"

शारदा : "पर आँगनवाड़ी कार्यकर्ता होता क्या है ?"

उत्तरा : "हमारे गाँव में बच्चों के लिए एक छोटा केन्द्र शुरू हुआ है । यह केन्द्र आँगनवाड़ी कहलाता है और मैं ही इस केन्द्र को चलाऊंगी ।"

शारदा : "केन्द्र में तुम क्या करोगी ?"

उत्तरा : "शारदा बहन, तुम्हारे बच्चे कितने बड़े हैं ?"

शारदा : "मेरा सबसे छोटा बच्चा केवल तीन महीने का है, उससे बड़ा लड़का चार वर्ष का और सबसे बड़ी बेटी कुछ ही महीनों में सात वर्ष की हो जाएगी ।"

उत्तरा : "तो तुम सुबह मेरे घर क्यों नहीं आ जातीं । वहीं यह केन्द्र स्थापित किया गया हैं । तुम स्वयं आ कर देख सकती हो कि हम वहाँ क्या-क्या करते हैं और मैं आँगनवाड़ी के रजिस्टर में तुम्हारे दोनों छोटे बच्चों के नाम भी नोट कर लूँगी ।"

शारदा को उत्सुकता हुई और उसने अगले दिन आँगनवाड़ी केन्द्र जाने का निश्चय किया । क्या आप भी शारदा के साथ आँगनवाड़ी केन्द्र देखने जाना पसंद करेंगे ?

उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- महिलाओं और बच्चों के विकास के लिए किसी कार्यक्रम की आवश्यकता को समझा सकेंगे;
- किसी आँगनवाड़ी केन्द्र में प्रदान की जाने वाली सेवाओं की सूची बना सकेंगे;
- किसी आई.सी.डी.एस. परियोजना की प्रशासनिक ढाँचे का वर्णन कर सकेंगे;
- आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, पर्यवेक्षक और बाल विकास परियोजना अधिकारी द्वारा किए जाने वाले कार्यों की सूची तैयार कर सकेंगे;
- किसी आई.सी.डी.एस. परियोजना के विभिन्न कार्यकर्ताओं की भूमिका के बारे में जान पाएँगे;
- आई.सी.डी.एस. जैसे कार्यक्रम में समुदाय की भागीदारी के महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे;
- आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम सरकार के अन्य कार्यक्रमों से कैसे संबद्ध है, इसकी चर्चा कर सकेंगे, और
- आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के कार्यान्वयन को प्रभावित करने वाली समस्याओं की सूची बना सकेंगे।

19.2 आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के लाभार्थी

अगले दिन ....

शारदा आँगनवाड़ी केन्द्र देखने जाती है । वहाँ कुछ बच्चे पहले से ही एकत्रित हैं । वे सभी 3 से 6 वर्ष की आयु वर्ग में हैं । उत्तरा बाई के पास एक उपस्थिति रजिस्टर है जिसमें उनके नाम लिखें हैं : कृष्ण, अब्दुल, माया, डेविड आदि । उत्तरा उसी पन्ने पर शारदा के चार वर्षीय पुत्र जीवन का नाम लिखती है । उसके पश्चात वह उपस्थिति रजिस्टर का दूसरा पन्ना पलटती है और शारदा का नाम भी लिख लेती है । शारदा को यह देख आश्चर्य होता है । तब उत्तरा उसे बताती है :

"तुम्हारा एक बच्चा तीन महीने का है और तुम उसे स्तनपान कराती हो । इसलिए तुम भी आँगनवाड़ी की लाभार्थी हो । यदि आँगनवाड़ी की स्थापना पिछले वर्ष ही हो गई होती जब तुमने गर्भधारण किया था, तो हमारे रजिस्टर में तुम्हारा नामांकन एक गर्भवती माता के रूप में हो जाता और तुम्हारी बड़ी बेटी भी, जो पिछले वर्ष छह साल की आयु से कम की थी, शालापूर्व क्रियाओं के लिए केन्द्र आ सकती थी।

आँगनवाड़ी के लाभार्थियों में निम्नलिखित शामिल हैं :

- **0 से 6 वर्ष के बच्चे, और**
- **गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताएँ**

भाग 19.6 में आपको आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के लाभार्थियों के बारे में विस्तार से बताया जाएगा ।

19.3 आँगनवाड़ी क्या है ?

उत्तरा शीघ्रता से बच्चों को एक छोटे घेरे में खड़ा करती है, अपने हाथ जोड़कर खड़ी होती है और एक प्रार्थना बोलती है । बच्चे उसके पीछे प्रार्थना को दुहराते हैं। तत्पश्चात, यह देखने के लिए कि बच्चे साफ-सुथरे हैं या नहीं, वे प्रत्येक बच्चे के चेहरे, नाखून, बाल और कानों की जाँच करती है। वह सहायक को बुलाती है और जिन बच्चों की सफाई में कमी पाई जाती है, उनको साफ करने के लिए कहती है । इसके बाद उत्तरा बच्चों को एक कहानी सुनाती है । कहानी सुनने के पश्चात, बच्चे उस कहानी पर आधारित एक नाटक अभिनीत करते हैं । इसके बाद उत्तरा बच्चों को विभिन्न रंगों की पहचान कराने के लिए एक खेल आयोजित करती है, जिसमें वह फूलों और पत्तियों का प्रयोग करती है । अंत में, वह बच्चों को चिकनी मिट्टी देती है और बच्चों को उससे अपनी मनपसंद की चीजें बनाने को कहती है ।

इन शालापूर्व क्रियाओं में लगभग दो घंटे लगते हैं । दिन के अंत में सहायक बच्चों के हाथ धोती है और उत्तरा उन्हें भोजन बाँटती है, जो उन्हें आँगनवाड़ी में ही खाना होता है । उसके बाद बच्चे घर जाते हैं । उत्तरा बाई, शारदा और कुछ अन्य माताओं को भी (जो वहाँ एकत्र हो गई थीं) कुछ भोजन देती है । तथापि, उत्तरा बाई का दिन यहीं समाप्त नहीं होता । उसे निम्नलिखित रजिस्टर भरना होता है :

- पूरक पोषण सेवाएँ रजिस्टर (Supplementary Nutrition Services Register), जिसमें वह उन बच्चों और माताओं के नाम के आगे उपस्थिति लगाती है जो उस दिन केन्द्र में आई थी और जिन्हें उस दिन भोजन दिया गया था।
- खाद्य स्टॉक रजिस्टर (Food Stock Register), जिसमें वह उस राशन की मात्रा लिखती है जो उसने भोजन पकाने के लिए उस दिन इस्तेमाल किया था; और
- दैनिकी (Daily Diary), जिसमें उन विभिन्न क्रियाओं का रिकार्ड होता है जो उसने बच्चों के साथ की हैं और वह कार्य जो वह बच्चों के घर जाने के बाद करेगी ।

इन रजिस्टरों को पूरा करने के बाद, अब वह घरों के दौरों पर जाने के लिए तैयार है । अपने प्रशिक्षण के दौरान उसे बताया गया था कि उसके दैनिक कार्यों मे से एक कार्य है प्रतिदिन पाँच घरों का दौरा करना, ताकि समुदाय से संपर्क स्थापित किया जा सके, उनमें जागरूकता पैदा की जा सके, समस्याओं (अगर कोई है) का समाधान किया जा सके और वह आँगनवाड़ी क्रियाओं में भागीदारी के लिए लोगों को प्रोत्साहित कर सके । उत्तरा अपने रिकार्डों को देखती है । अरे ! कल टीकाकरण दिवस है । उसे उन माताओं से संपर्क करना होगा जिनके बच्चों का टीकाकरण नहीं हुआ है और उनमें टीकाकरण के महत्व के बारे में बताना होगा । चूँकि महिला स्वास्थ्य विजिटर (Lady Health Visitor: LHV) के साथ डाक्टर भी होंगे, तो वह आँगनवाड़ी पर सभी बच्चों और गर्भवती माताओं के स्वास्थ्य की जाँच भी करेंगे । इस अवसर का लाभ उठाकर उत्तरा ने बच्चों की वृद्धि अनुवीक्षण करने के लिए वज़न नापने की मशीन पर बच्चों का वज़न लेने की भी सोची है । उसने यह भी सोचा है कि वह डाक्टर से कहेगी कि वह (डाक्टर) बीमार बच्चों को स्वास्थ्य केन्द्र भेजने के लिए निर्देश दें।

घरों के अपने पिछले दौरों के दौरान उत्तरा ने स्त्रियों से अनुरोध किया था कि वें आँगनवाड़ी की कुछ क्रियाओं में उसकी मदद करें । अत: उसने प्रधान के घर जाकर यह पता लगाने का निश्चय किया

कि क्या प्रधान की बेटी कल उतने समय के लिए (जितनी देर डाक्टर व एल.एच.वी. रहेंगे) बच्चों के लिए क्रियाएँ आयोजित करने में उसकी मदद कर सकती है ?

आँगनवाड़ी वह स्थान या केन्द्र है जहाँ लाभार्थियों को छह संगठित सेवाएँ (Package of Services) प्रदान की जातीं हैं । ये सेवाएँ हैं :

- अनौपचारिक शालापूर्व शिक्षा
- पूरक पोषण
- स्वास्थ्य जाँच
- संदर्भ सेवाएँ
- टीकाकरण
- पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा

शारदा के आँगनवाड़ी केन्द्र पर जाने के वर्णन को एक बार फिर से पढ़िए । क्या उत्तरा बाई द्वारा ऊपर बताई गई यह छह सेवाएँ प्रदान की जा रहीं हैं ?

आइए, अब आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के बारे में विस्तार से पढ़ें ।

19.4 आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के उद्देश्य

सन् 1974 में भारत सरकार ने बच्चों के लिए एक राष्ट्रीय नीति का प्रतिपादन किया। आपको याद होगा कि DECE-1 की इकाई 29 में आप इस बारे में पढ़ चुके हैं, जहाँ हमने देश में बाल विकास सेवाओं के इतिहास के बारे में चर्चा की थी । इस नीति द्वारा सरकार को छह वर्ष की आयु से कम उम्र के बच्चों के लिए सबसे बड़े कार्यक्रम की योजना बनाने में सहायता प्राप्त हुई । **यह कार्यक्रम था, समेकित बाल विकास सेवा कार्यक्रम जिसका संक्षिप्त नाम है आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम, और इसी नाम से यह ज्यादा प्रचलित है ।**

इस कार्यक्रम के पाँच मुख्य उद्देश्य हैं । इनमें से चार के बारे में आपको पहले ही DECE-1 के खंड 7 की इकाई 29 में बताया जा चुका है । क्या आपको याद है कि वे उद्देश्य क्या थे ? नीचे दिए गए स्थान में उनको लिखिए ।

....

....

....

....

जी हाँ, आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के जिन चार उद्देश्यों से आप परिचित हैं, वे हैं :

i) 0 से 6 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के पोषणात्मक और स्वास्थ्य स्तर को सुधारना ।

ii) बच्चों के सही मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और सामाजिक विकास की नींव रखना ।

iii) मृत्यु, रुग्णता, कुपोषण और स्कूल बीच में छोड़ देने की आयतन को कम करना ।

iv) बच्चे के सामान्य स्वास्थ्य और पोषणात्मक आवश्यकताओं की देखभाल करने के लिए, माताओं को समुचित पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा देकर, माताओं की अपने बच्चों की देखभाल करने के सामर्थ्य में वृद्धि करना ।

आई.सी.डी.एस. का पाँचवा उद्देश्य है :

- बाल विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकार के विभिन्न विभागों के साथ समन्वयन करना ।

इन उद्देश्यों पर आधारित छह सेवाओं का पैकेज, बच्चों और उनकी माताओं व समुदाय की अन्य स्त्रियों को प्रदान किया जाता है । जैसा कि आप DECE-1 की इकाई 29 में पढ़ चुके हैं, आँगनवाड़ी में विभिन्न लाभार्थियों को विभिन्न सेवाएँ दी जातीं हैं । निम्नलिखित अभ्यास से आपको अपनी स्मृति पुन: ताजा करने में सहायता मिलेगी ।

बोध प्रश्न 1

1) कॉलम 'ख' में दी गई सेवाओं का कॉलम 'क' में सूचीबद्ध उन सेवाओं को प्राप्त करने वाले लक्ष्य समूह से मिलान कीजिए ।

	कॉलम क		कॉलम ख
i)	0 से 3 वर्ष के बच्चे	क)	पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा
ii)	3 से 6 वर्ष की उम्र के बच्चे	ख)	पूरक पोषण टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच, संदर्भ सेवाएँ, पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा
iii)	गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताएँ	ग)	पूरक पोषण, टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच, संदर्भ सेवाएँ
iv)	15 और 45 वर्ष की उम्र के बीच की स्त्रियाँ	घ)	पूरक पोषण, टीकाकरण, स्वास्थ्य, जाँच, संदर्भ सेवाएँ अनौपचारिक शालापूर्व शिक्षा

19.5 आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम की विशेषताएँ

आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम की कई ऐसी विशेषताएँ हैं जो इससे पहले कार्यान्वित कार्यक्रमों में नहीं थीं। यह विशेषताएँ सरकार द्वारा बच्चों के लिए पहले चलाए गए कार्यक्रमों, जैसे कल्याण विस्तार परियोजनाएँ (Welfare Extension Projects) जिनके अन्तर्गत बच्चों के लिए बालवाड़ियाँ स्थापित की गई थीं, के परिणामों और अनुभवों से उभरी हैं । क्या आपको याद है कि इकाई 29 (DECE-1) में आपने बाल विकास के क्षेत्र में सरकार के प्रारंभिक प्रयासों के बारे में क्या पढ़ा था ?

आइए, हम आई.सी.डी.एस. की उन विशेषताओं पर नज़र ड़ालें जो इसे बच्चों के लिए चलाए गए पिछले कार्यक्रमों से भिन्न बनाती हैं ।

- **यह कार्यक्रम समेकित है;** अर्थात, सभी छह सेवाएँ सभी बच्चों को एक साथ एक ही स्थान पर प्रदान की जातीं हैं, ताकि सेवाओं का बच्चों पर कुछ प्रभाव पड़ सके । उदाहरण के लिए, बच्चों के स्वास्थ्य को सुधारने के लिए उन्हें पूरक पोषण दिया जाता है; रोगों की रोकथाम के लिए टीके लगाए जाते हैं; बच्चों के सर्वांगीण विकास और उन्हें स्कूल जाने के लिए तैयार करने के लिए उन्हें शालापूर्व क्रियाओं में शामिल किया जाता है ।

- **ये सेवाएँ बच्चों को उनके घर के बिल्कुल समीप ही प्रदान की जातीं हैं** क्योंकि आँगनवाड़ी उनके घरों के समीप ही स्थित होती है।

- **इस कार्यक्रम के अन्तर्गत बच्चे को उस समय से ही सेवाएँ प्रदान की जाने लगती हैं जब से वह माँ के गर्भ में होता है ।** जैसे ही यह पता चलता है कि माता गर्भवती है, उसे पूरक आहार, टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच और संदर्भ सेवाएँ प्राप्त करने के लिए आँगनवाड़ी में नामांकित कर लिया जाता है ।

- **यह माताओं की योग्यताओं को विकसित करता है** ताकि जन्म से ही वे अपने बच्चों की स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें । इसके लिए बैठकें की जाती हैं। इन बैठकों के दौरान कार्यकर्ता माताओं से बातचीत करती है और उन्हें बच्चों के पालन-पोषण के उपयुक्त तरीकों के बारे में बताती है ।

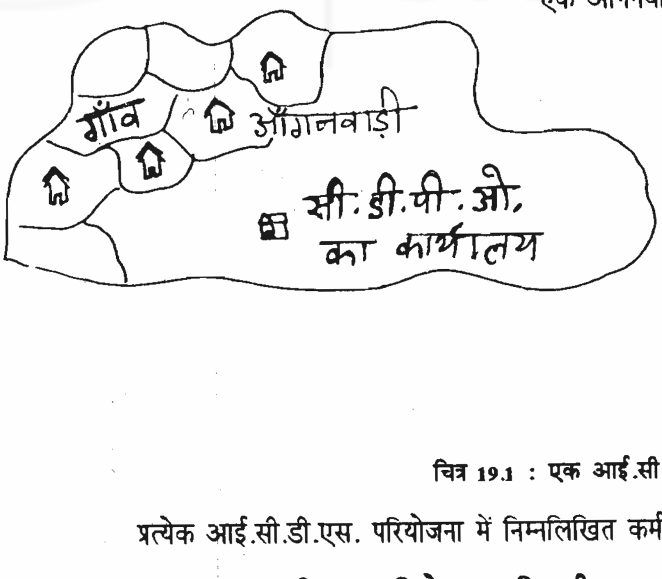
- यह समुदाय का कार्यक्रम है और सेवाएँ प्रदान करने में उनकी भागीदारी की अपेक्षा करता है । आँगनवाड़ी कार्यकर्ता से यह अपेक्षा की जाती है कि वह लोगों को आँगनवाड़ी आने के लिए प्रोत्साहित करे, जिससे कि वे सेवाओं का लाभ उठा सकें, अन्य लाभार्थियों को सेवाएँ प्रदान करने में उसकी मदद कर सकें और स्व-विकास के लिए निर्णय ले सकें ।
- **सेवाएँ प्रदान करने के लिए इस कार्यक्रम में एक स्थानीय स्त्री की मदद ली जाती है, जिसे आँगनवाड़ी कार्यकर्ता कहा जाता है** । आँगनवाड़ी कार्यकर्ता का चयन गाँव की महिलाओं में से ही किया जाता है, ताकि लोग उससे परिचित हों और उसे स्वीकार करें । स्थानीय होने के कारण, वह लोगों से मिलने और उनकी सहायता करने के लिए हर समय उपलब्ध होती है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि वह (आँगनवाड़ी कार्यकर्ता आँगनवाड़ी पर दी जाने वाली सेवाओं का केन्द्र बिन्दु होती है ।

19.6 कार्यक्रम की रूपरेखा और विस्तार

- एक आई.सी.डी.एस. परियोजना के अन्तर्गत 100 आँगनवाड़ी केन्द्र होते हैं ।
- आँगनवाड़ी केन्द्र एक ऐसे गाँव या गाँवों के समूह में स्थापित किया जाता है, जिसकी कुल जनसंख्या लगभग 1,000 हो ।

इस सूचना के आधार पर, आप एक आई.सी.डी.एस. परियोजना के व्याप्ति (coverage) के बारे में क्या कह सकते हैं ? अर्थात एक परियोजना से कितने लोग लाभान्वित होते हैं । जी हाँ, एक आई.सी.डी.एस. परियोजना क्षेत्र में लगभग एक लाख लोग होते हैं । अर्थात, एक आई.सी.डी.एस. परियोजना एक प्रशासकीय खंड को लाभान्वित करती है । प्रशासकीय खंड क्या होता है ? शायद आप जानते हों कि प्रबंधन की सुविधा के लिए भारत 5,000 खंडों में बंटा हुआ है । प्रत्येक खंड के अन्तर्गत लगभग एक लाख जनसंख्या आती है ।

एक आई.सी.डी.एस. परियोजना : 100 आँगनवाड़ी केन्द्र
एक आँगनवाड़ी केन्द्र : 1000 जन संख्या के लिए स्थापित



चित्र 19.1 : एक आई.सी.डी.एस. परियोजना

प्रत्येक आई.सी.डी.एस. परियोजना में निम्नलिखित कर्मचारी होते हैं :

- **एक बाल विकास परियोजना अधिकारी** (Child Development Project Officer, सी.डी.पी.ओ.) जो सभी 100 आँगनवाड़ी केन्द्रों की देखभाल करता है ।

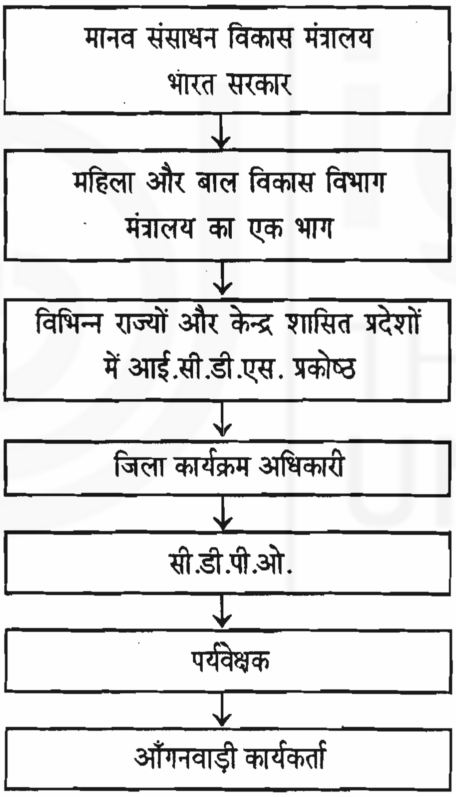
- **4-5 पर्यवेक्षक ।** ये सी.डी.पी.ओ. के अधीन कार्य करते हैं, और प्रत्येक पर्यवेक्षक 20-25 आँगनवाड़ी केन्द्रों के कार्य का निरीक्षण करता/करती है ।
- **100 आँगनवाड़ी कार्यकर्ता :** प्रत्येक आँगनवाड़ी केन्द्र को चलाने के लिए एक कार्यकर्ता ।
- **100 सहायक :** प्रत्येक आँगनवाड़ी केन्द्र के लिए एक सहायक ।

सभी आई.सी.डी.एस. परियोजनाएँ एक साथ कैसे जुड़ी हुई हैं ?

एक जिले में, उसके आकार और जनसंख्या के आधार पर, एक या एक से अधिक आई.सी.डी.एस. परियोजनाएँ हो सकती हैं । एक जिले की सभी परियोजनाओं के सभी सी.डी.पी.ओ. **एक जिला कार्यक्रम अधिकारी (Block Development Officer) को रिपोर्ट करते हैं ।**

इसी क्रम में, राज्य के सभी जिलों के जिला कार्यक्रम अधिकारी, राज्य के आई.सी.डी.एस. प्रकोष्ठ (ICDS Cell) को रिपोर्ट करते हैं । यह प्रकोष्ठ कल्याण मंत्रालय में या स्वास्थ्य मंत्रालय में स्थित हो सकता है । कभी-कभी विभिन्न राज्यों में इन मंत्रालयों के नामों में थोड़ा सा अंतर हो सकता है । **राज्य मंत्रालयों के ये आई.सी.डी.एस. प्रकोष्ठ केन्द्र में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के महिला और बाल विकास विभाग से जुड़े होते हैं ।**

चित्र 19.2 में दिए गए चार्ट को देखें । इसमें आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम की प्रशासकीय संरचना दर्शायी गई है ।



चित्र 19.2 : आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम की प्रशासकीय संरचना

कार्यक्रम का विस्तार

शुरू में, प्रयोगात्मक आधार पर केवल 33 आई.सी.डी.एस. परियोजनाएँ प्रारंभ की गई थीं । ये देश की 33 विभिन्न प्रशासकीय खंडों (ब्लॉकों) में शुरू की गई थीं । जब 33 परियोजनाओं के साथ यह पहला प्रयोग सफल सिद्ध हुआ, तो सरकार ने इस कार्यक्रम का विस्तार करने का निर्णय लिया । मानव संसाधन विकास मंत्रालय के महिला और बाल विकास विभाग के अनुसार, आज देश में 3,000 से अधिक परियोजनाएँ हैं, जो पूरे देश में फैली हुई हैं । ये परियोजनाएँ मुख्यत: ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में स्थित हैं । शहरी स्लम क्षेत्रों में भी परियोजनाएँ तो हैं, पर इनकी संख्या कम है ।

आई.सी.डी.एस. परियोजनाएँ पिछड़े और गरीब क्षेत्रों में प्रारम्भ की गई हैं और इनके अन्तर्गत उन बच्चों को सम्मिलित किया जाता है जो निम्नलिखित से संबद्ध हैं :

- भूमिहीन परिवारों
- वे परिवार जिनकी मासिक आय 500 रु. से कम है
- सीमांत किसान; अर्थात वे किसान जिनके पास बहुत छोटे खेत हैं
- अनुसूचित जातियाँ और अनुसूचित जनजातियाँ

भाग 19.2 में और अभी-अभी जो आपने पढ़ा, उसके आधार पर क्या आप बता सकते हैं कि आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के लाभार्थी कौन-कौन हैं ?

आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के लाभार्थी वे बच्चे और स्त्रियाँ हैं जो पिछड़े गरीब सामाजिक वर्ग से हैं, जो मुख्यत: ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों व शहरी स्लमों में रहते हैं ।

19.7 परियोजना का प्रारम्भ

परियोजना का प्रारम्भ परियोजना क्षेत्र, सी.डी.पी.ओ. और पर्यवेक्षकों के चयन के साथ होता है । परियोजना क्षेत्र का चयन राज्य करता है और यह इस पर निर्भर करता है कि अनुसूचित जातियों और पिछड़ी जनजातियों की ज्यादा आबादी किस इलाके में है ।

सी.डी.पी.ओ. और पर्यवेक्षकों के कार्य

सी.डी.पी.ओ. और पर्यवेक्षकों का चयन करने के पश्चात, उन्हें प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है । जब वे प्रशिक्षण के बाद अपने परियोजना क्षेत्र में लौटते हैं, तब परियोजना का प्रारम्भ करने के लिए निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करते हैं ।

- **गाँव के नेताओं और विशिष्ट व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित करना**

  सी.डी.पी.ओ. और पर्यवेक्षक, परियोजना क्षेत्र का नक्शा बनाते हैं और क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले सभी गाँवों के सरपंचों, पंचायत के सदस्यों और अन्य विशिष्ट व्यक्तियों से संपर्क करते हैं और उनके साथ बैठकें नियत करते हैं । वे उनको कार्यक्रम के बारे में समझाते हैं और इसके लाभों के बारे में चर्चा करते हैं, जैसे कि:

  i) आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम द्वारा गाँवों की माताओं और शिशुओं की मृत्यु की रोकथाम होगी।

  ii) आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम गर्भावस्था के दौरान माताओं की देखभाल करके और उन्हें पूरक आहार प्रदान करके, यह सुनिश्चित करेगा कि स्वस्थ बच्चे अधिक पैदा हों ।

  iii) आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न रोगों की रोकथाम के लिए बच्चों को प्रतिरक्षी टीके लगाए जाएँगे और इस प्रकार, उन्हें अपंग और बीमार होने से बचाया जाएगा ।

  iv) आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के अन्तर्गत बच्चों को पूरक आहार प्रदान किया जाएगा व उनका वृद्धि अनुवीक्षण किया जाएगा, जिससे उन्हें कुपोषित होने से बचाया जा सके ।

  v) आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम द्वारा बच्चों के संपूर्ण (सर्वांगीण) विकास को बढ़ावा दिया जाएगा और उन्हें स्कूल जाने के लिए तैयार किया जाएगा ।

- **समुदाय के साथ बैठकों का आयोजन करना**

  नेताओं की मदद से, सी.डी.पी.ओ. और पर्यवेक्षक सभी गाँवों में, समुदाय के साथ बैठकों की व्यवस्था करते हैं । बैठकें आयोजित करने में निहित लक्ष्य होता है – गाँव के लोगों को आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के बारे में बताना और इसके द्वारा प्रदान की जा रही सेवाएँ और उनके लाभ। साथ ही, गाँव के लोगों से आँगनवाड़ी की क्रियाओं में शामिल होने के लिए अनुरोध भी किया जाता है ।

- **आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायकों का चयन**

  मीटिंगों के दौरान, ग्राम समुदाय कुछ स्त्रियों के नाम प्रस्तावित करके आँगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायक चुनने में सी.डी.पी.ओ. की मदद करता है । कार्यकर्ता चुनी जाने वाली महिला;

- गाँव से ही होनी चाहिए; और
- उसकी शैक्षिक योग्यता आठवीं कक्षा या इससे अधिक होनी चाहिए। ऐसी जगहों पर जहाँ शिक्षित स्त्रियाँ मिलना मुश्किल हो, वहाँ आठवीं कक्षा से कम पढ़ी हुई या अशिक्षित स्त्रियों को भी चुना जा सकता है ।

एक कार्यकर्ता का चुनाव करते समय यह पता करना जरूरी है कि क्या उसे बच्चे के साथ काम करना पसंद है, उससे जिन दायित्वों को निभाने की अपेक्षा की जाती है, उनके प्रति उसकी रुचि है या नहीं, और उसका समुदाय के साथ अच्छा संबंध है या नहीं ।

सहायक, समुदाय की ही कोई ऐसी स्त्री हो सकती है जो जरूरतमंद हो, जैसे कि एक विधवा, या कोई ऐसी स्त्री जिसे उसके पति ने छोड़ दिया हो या फिर कोई बड़ी उम्र की महिला ।

- **आँगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायकों का प्रशिक्षण**

  आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को तीन महीने के प्रशिक्षण के लिए आँगनवाड़ी कार्यकर्ता प्रशिक्षण केन्द्रों (Anganwadi Workers Training Centre – ए.डब्ल्यू.टी.सी.) में भेजा जाता है । सहायकों का प्रशिक्षण 10 कार्य दिवसों का होता है । इसके पश्चात जब कार्यकर्ता व सहायकों को काम करते हुए दो वर्ष हो जाते हैं, तो उन्हें एक पुनश्चर्या प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (Refresher Training Programme) के लिए जाना पड़ता है । इस प्रशिक्षण की अवधि कार्यकर्ता के लिए दो हफ्ते और सहायकों के लिए एक हफ्ते की होती है ।

आँगनवाड़ी कार्यकर्ता के कार्य

आइए, अब देखें कि प्रशिक्षण से वापस आने के बाद आँगनवाड़ी कार्यकर्ता को क्या काम करना पड़ता है ।

- **आँगनवाड़ी केन्द्र का चयन**

  प्रशिक्षण के बाद आँगनवाड़ी कार्यकर्ता को अपना केन्द्र चलाने के लिए कोई स्थान ढूंढना पड़ता है । ऐसा करते समय आँगनवाड़ी कार्यकर्ता को कौन-कौन सी बातें ध्यान में रखनीं चाहिएँ, क्या आप उनकी सूची बना सकते हैं ?

DECE-1 की इकाई 31 को फिर से पढ़िए और जाँचिए कि क्या आपको सभी बातें याद हैं ?

आँगनवाड़ी केन्द्र के लिए स्थान का चयन करते समय, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता को यह भी याद रखना चाहिए कि :

- यह लाभार्थियों के घरों के नज़दीक हो ।
- गाँव के बीच में हो ताकि बच्चे आसानी से आ सकें । यदि केन्द्र बच्चों के घरों से बहुत दूर होगा, तो उन्हें हर रोज़ वहाँ पैदल चलकर आने-जाने में उन्हें मुश्किल होगी।
- **आँगनवाड़ी केन्द्र की स्थापना करना**

  केन्द्र के लिए स्थान चुनने के बाद आँगनवाड़ी कार्यकर्ता को इसकी व्यवस्था करनी होती है । प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान उसने जो भिन्न-भिन्न सहायक सामग्री बनाई है, कार्यकर्ता यह सामग्री व कुछ अन्य चार्टों और पोस्टरों को केन्द्र में लगाती है ताकि केन्द्र आकर्षक दिखे । वह अपने मंडल (सर्किल) के पर्यवेक्षक और सी.डी.पी.ओ. से संपर्क करती है ताकि आँगनवाड़ी के लिए उपकरण व आपूर्तियाँ प्राप्त हो सकें । केन्द्र चलाने के लिए उसे निम्नलिखित वस्तुएँ दी जाएँगी :

- खाद्य राशन के भंडारण के लिए डिब्बे
- पूरक आहार पकाने के लिए बर्तन
- बच्चों को पूरक आहार परोसने के लिए कटोरियाँ/प्लेटें
- वज़न नापने की मशीन और वृद्धि चार्ट रजिस्टर
- बच्चों के बैठने के लिए दरियाँ/रबर
- शालापूर्व क्रियाओं के लिए खेल सामग्री
- रिकार्ड रखने के लिए रजिस्टर
- स्वास्थ्य और स्वच्छता-क्रियाओं के लिए बाल्टी, साबुन, नेलकटर आदि ।
- सभी सामग्री रखने के लिए बक्सा ।

- **सर्वेक्षण करना**

  आँगनवाड़ी के लिए जगह ढूंढने और उसकी व्यवस्था की योजना बनाने के साथ ही साथ, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता को पूरे गाँव का सर्वेक्षण करना भी शुरू कर देना चाहिए । उसे प्रत्येक परिवार के बारे में, अलग-अलग सर्वेक्षण फार्म पर, सूचनाएँ नोट कर लेनी चाहिएँ और तत्पश्चात सर्वेक्षण रजिस्टर में सभी सूचनाओं को संकलित कर लेना चाहिए ।

आइए, एक आँगनवाड़ी कार्यकर्ता – तारादेवी – के साथ उसके गाँव का सर्वेक्षण करने चलें ।

तारा के गाँव में 85 घर हैं । वह अपना सर्वेक्षण कार्य अपनी जान-पहचान के परिवारों से शुरू करने का निश्चय करती है । वह अपने पड़ौसी के घर जाती है और दादी माँ को नमस्कार करती है, जो वहाँ बैठी सब्जियाँ काट रही है ।

तारा : "राम राम ताई ! कैसी हो ?"

दादी माँ : "राम राम तारा । मैं अच्छी हूँ । तुम कैसी हो ? आज़ तुम इधर कैसे आईं?"

तारा : (दादी माँ के पास बैठकर, काटने के लिए सब्जियाँ छाँटने में मदद करती है) ताई, मुझे गाँव का सर्वेक्षण करना है । मुझे यह पता लगाना है कि इस गाँव में रहने वाले लोगों की कुल संख्या क्या है, छह वर्ष से कम आयु के कितने बच्चे हैं, पिछले एक साल में कितने बच्चे पैदा हुए और इनमें अपंग बच्चे कितने हैं, आदि।

दादी माँ : "पर क्यों ? इससे तुम्हें क्या मदद मिलेगी ?"

तारा : "ताई, बात यह है कि मुझे आँगनवाड़ी में नामांकित होने और सेवाएँ प्राप्त करने वाले सभी बच्चों की सूची बनानी है, और अपने गाँव की स्त्रियों और बच्चों की स्थिति और स्तर के बारे में लिखना है । चार महीनों के बाद, जब मैं इस सूचना को अद्यतन करूंगी, तब मुझे पता चलेगा कि इन स्त्रियों व बच्चों के स्वास्थ्य के स्तर में कुछ परिवर्तन हुआ है कि नहीं, अर्थात इन सेवाओं से उन्हें कुछ लाभ हुआ या नहीं ।"

सर्वेक्षण के दौरान तारा ने सभी ग्रामवासियों को आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के बारे में भी सूचना दी । उसने उनके प्रश्नों के उत्तर दिए व उनके संदेहों व शंकाओं का निवारण किया ।

अपने सर्वेक्षण फार्मों से प्राप्त जानकारी का सार बनाने में उसे 4-5 दिन लग गए। उसने घरों की कुल संख्या को गिना । अब उसे पता लग चुका था कि गाँव में कितने लोग हैं, और उसमें कितनी स्त्रियाँ हैं व कितने बच्चे हैं । सर्वेक्षण के आँकड़ों से तारा को पता चला कि अनेकों बच्चे जन्म के फौरन बाद ही मर जाते थे । इस बात से उसे चिंता हुई । उसने यह निश्चय किया कि अपने अगले दौरे पर वह पर्यवेक्षक से बात करके उससे पूछेगी कि इस बारे में क्या किया जा सकता है । आइए, देखें कि पर्यवेक्षक से उसने क्या कहा ।

पर्यवेक्षक : "एक सर्वेक्षण द्वारा हमें यह जानने में मदद मिलती है कि गाँव में बच्चों, स्त्रियों व लोगों की क्या स्थिति है । सर्वेक्षण से प्राप्त सूचना के आधार पर हम यह निर्णय ले सकते हैं कि लोगों की स्थिति में सुधार लाने के लिए क्या किया जाना चाहिए। तुम्हारे मामले में, हमें यह प्रयास करना चाहिए कि शिशु मृत्यु दर को कम किया जाए । इसके लिए जैसे ही महिला गर्भवती हो, उसका नाम आँगनवाड़ी के रजिस्टर में दर्ज कर लेना चाहिए । इससे यह सुनिश्चित हो सकेगा कि स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा उनकी नियमित रूप से प्रसवपूर्ण, जाँच हो रही है या नहीं, और उनका प्रसव प्रशिक्षित जन्म परिचरों/स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा ही किया जाएगा अथवा स्वास्थ्य केन्द्र पर प्रसव किया जाएगा । इन प्रयासों को एक वर्ष तक करने के बाद, हम एक बार फिर सर्वे करेंगे और इस नए व पिछले सर्वे के आँकड़ों की तुलना करेंगे कि क्या मृत्यु दर में कमी आई है या नहीं । इस प्रकार सर्वे से लक्ष्य निर्धारित करने में सहायता मिलती है ।"

तारा ने अपने पर्यवेक्षक के साथ इस लक्ष्य हेतु क्या योजना बनाई, इसके बारे में हम अगले भाग में पढ़ेंगे । एक नई परियोजना प्रारम्भ करने के संदर्भ में, निम्नलिखित पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है :

गाँव के प्रधान को आँगनवाड़ी केन्द्र का उद्घाटन करने के लिए व सभी गाँववासियों को केन्द्र पर आने और उद्घाटन समारोह देखने के लिए निमंत्रित करना एक अच्छा विचार है । इस तरह सभी लोग इन सेवाओं के बारे में अवगत हो जाएँगे । माताओं को आँगनवाड़ी केन्द्र के खुलने व बंद होने के समय के बारे में भी बता देना चाहिए ।

केन्द्र का प्रारम्भ करते समय कार्यकर्ता को लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कुछ परिवर्तन करने पड़ सकते हैं । उदाहरण के लिए, हो सकता है आँगनवाड़ी का समय माताओं को अनुकूल न लगे । चूँकि गाँवों में, अधिकाँश स्त्रियाँ सुबह तड़के खेतों में काम करने चली जाती हैं और यदि बच्चों की देखभाल करने वाला घर पर कोई न हो, तो उन्हें भी साथ ले जाती हैं। ऐसे मामलों में आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, पर्यवेक्षक से विचार-विमर्श करके केन्द्र के समय में परिवर्तन कर सकती है और सुबह 9 बजे के बजाय केन्द्र को 7.30 बजे शुरू कर सकती है, ताकि माताएँ खेतों पर जाते समय अपने बच्चों को आँगनवाड़ी में छोड़ सकें ।

बोध प्रश्न 2

1) गलत उत्तरों पर (x) का निशान लगाएँ ।

   सर्वेक्षण से हमें निम्नलिखित में सहायता मिलती है :

   i) समुदाय से संपर्क स्थापित करने में

   ii) समुदाय को आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के बारे में बताने में

   iii) आँगनवाड़ी के लिए जगह ढूंढ़ने में

   iv) समुदाय में बच्चों की स्थिति का पता लगाने में

   v) आँगनवाड़ी में क्या पूरक पोषण दिया जाए, इसकी योजना बनाने में

   vi) विभिन्न सेवाओं के लाभार्थियों की पहचान करने में

   vii) प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्यों की योजना बनाने में

   viii) कार्यवाही किए जाने वाले कार्यों की योजना बनाने में

19.8 सी.डी.पी.ओ. द्वारा बनाई गई योजना

क्या आपको याद है कि वे विभिन्न सेवाएँ क्या हैं जो एक आँगनवाड़ी कार्यकर्ता को आँगनवाड़ी में प्रदान करनी चाहिएँ ? और उसे ये सेवाएँ क्यों प्रदान करनी चाहिएँ ? आइए, देखें कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि ये सेवाएँ प्रभावी रूप से दी जा रही हैं या नहीं, एक सी.डी.पी.ओ.

को क्या योजना बनाने की जरूरत है ? यह जानने के लिए आइए, हम विजया के कार्यालय में चलें, जो धर्मपुरा की आई.सी.डी.एस. परियोजना में सी.डी.पी.ओ. है ।

विजया उम्मीद कर रही थी कि अगले हफ्ते सभी आँगनवाड़ी कार्यकर्ता प्रशिक्षण से लौट आएँगे । उस दिन उसने पर्यवेक्षकों को भी अपने कार्यालय ही बुलाया था ताकि सभी मिलकर यह विचार कर सकें कि आँगनवाड़ी में सेवाएँ शुरू करने के लिए क्या-क्या कार्य करने हैं । विजया द्वारा तैयार की गई सूची इस प्रकार है :

- आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा शालापूर्व बच्चों के साथ प्रयोग में लाई जाने वाली समय सारिणी की योजना बनाना ।
- बच्चों को सप्ताह के दौरान प्रतिदिन भिन्न-भिन्न पूरक आहार देने के लिए छह व्यंजन विधियों की योजना बनाना।
- वे दिन/तारीखें निर्धारित करना जब बच्चों का वज़न लिया जाएगा।
- पोषण और स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा के लिए प्रतिदिन कितने घरों का दौरान करने जाना है (उनकी संख्या), माताओं के साथ कितनी बैठकें आयोजित करनी हैं, और समुदाय के साथ मास में कितनी बैठकें आयोजित करनी हैं -- उनकी योजना बनाना ।
- कब-कब स्वास्थ्य जाँच व टीकाकरण किया जाएगा, इस संबंध में चिकित्सा अधिकारी से मिलना।
- आँगनवाड़ी केन्द्रों को सभी उपकरणों की आपूर्ति करना ।
- आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की अपने पर्यवेक्षकों व सी.डी.पी.ओ. के साथ बैठकों की तारीखें तय करना ।
- गाँवों में महिला मंडल प्रारंभ करने की योजना बनाना ।
- आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को जो रिकार्ड रखने हैं, उनकी योजना बनाना ।
- जो लक्ष्य प्राप्त करने हैं, उनकी योजना बनाना और आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को इसके बारे में बताना ।

बैठक में इन मुद्दों से संबंधित जो निर्णय/कार्यवाही की गई, आइए उस पर नज़र डालें ।

- **शालापूर्व शिक्षा हेतु समय सारिणी की योजना बनाना**

विजया और पर्यवेक्षकों ने एक साप्ताहिक समय सारिणी तैयार की, जिससे कि आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को शालापूर्व बच्चों के साथ प्रतिदिन खेल क्रियाएँ आयोजित करने में मदद मिले । समय सारिणी की योजना बनाते समय, उपलब्ध स्थान और सामग्रियों को ध्यान में रखा गया । समय सारिणी में, क्रियाओं के वर्णन के अतिरिक्त, उस सहायक सामग्री का भी वर्णन किया गया था जिनकी क्रियाएँ आयोजित करने में जरूरत पड़ती है, जैसे कहानी की पुस्तकें, फ्लैनेल बोर्ड, कागज़, चिकनी मिट्टी आदि ।

विजया ने निश्चय किया कि आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं से इस बारे में बात करेगी कि क्रियाएँ किस प्रकार आयोजित करनी हैं और समय सारिणी का अनुसरण कैसे किया जाना है । उसने यह भी निर्णय किया कि वह हर तीन महीनों के बाद नयी समय सारिणी बनाएगी ।

क्या आप बता सकते हैं कि विजया ने हर 3-4 महीनों के बाद नयी समय सारिणी बनाने का निर्णय क्यों लिया ?

- **पूरक पोषण के लिए व्यंजन विधियों की योजना बनाना**

इसके पश्चात, विजया और पर्यवेक्षकों ने आँगनवाड़ी में बच्चों को दिए जाने वाले पूरक आहार की छह व्यंजन विधियों की योजना बनाई ।

आई.सी.डी.एस. परियोजनाओं में पूरक पोषण के लिए तीन प्रकार के राशन होते हैं । ये हैं :

i) केअर/या डब्ल्यू.एफ.पी. (CARE/WFP) राशन । अर्थात वह राशन जिसकी आपूर्ति ये दोनों दाता एजेन्सियाँ करती हैं ।

ii) तैयार खांद्य-पदार्थ । अर्थात, वे खाद्य पदार्थ जिन्हें पकाने की जरूरत नहीं होती और जो बच्चों को सीधे बाँटे जा सकते हैं ।

iii) स्थानीय खाद्य पदार्थ । इसमें वे खाद्य पदार्थ शामिल होते हैं जो स्थानीय रूप से ही बनाए जाते हैं ।

जिले की अन्य परियोजनाओं की ही भाँति, विजया की परियोजना में भी केयर की आहार आपूर्तियाँ प्राप्त हो रही थी । केअर द्वारा दिए जाने वाले आहार में मकई-सोया मिश्रित आटा, थोड़ा तेल व गुड़ शामिल होता है । यह निर्णय लिया गया कि इस राशन से जो छह भिन्न-भिन्न व्यंजन विधियाँ बन सकती हैं, वे हैं – रोटी, पूरी, पकौड़ा, पंजीरी, नमकीन दोसा, गुड़ दोसा और सब्जियों से तैयार उपमा। विजया ने यह सुझाव दिया कि उपमा के लिए सब्जियाँ समुदाय/बच्चों की माताओं से ली जा सकतीं हैं।

- **बच्चों का वज़न लेने की तिथि निर्धारित करना**

विजया की पर्यवेक्षकों के साथ जो बैठक हुई, उसमें यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक महीने के पहले सप्ताह में सभी बच्चों का वज़न लिया जाना चाहिए । पहले दो दिन तो आँगनवाड़ी में आने वाले सभी बच्चों का वज़न लेने में व्यतीत किए जाएँगे । तीसरे दिन आँगनवाड़ी कार्यकर्ता वज़न तोलने की मशीन लेकर उन सभी बच्चों के घर जाएँगे जो तीन वर्ष से कम आयु के हैं और जिनका आँगनवाड़ी में पंजीकरण हो चुका था, पर जो पिछले दो दिन आँगनवाड़ी नहीं आ पाए थे । वे उनके घर जाकर उनका वज़न लेंगे । इस तरह बच्चों का नियमित रूप से वज़न लेना सुनिश्चित हो सकेगा।

- **घरों के दौरे, माताओं की बैठकें और समुदाय की बैठकें तय करना**

निर्देशों के अनुसार, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता से यह आशा की जाती है कि वह ऐसे पाँच घरों में जाए, जिनके बच्चे शालापूर्व क्रियाओं के लिए आँगनवाड़ी नहीं आते या जो कुपोषित हैं या जिनकी स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्याएँ हैं । उससे यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा के लिए माताओं की बैठकें संचालित करे, गाँव में एक महिला मंडल का गठन करे और आँगनवाड़ी की क्रियाओं में सहायता देने के लिए मंडल से अनुरोध करे। उससे पूरे समुदाय के साथ बैठकें संचालित करने की आशा भी की जाती है ।

विजया और पर्यवेक्षकों ने आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को इस बारे में कुछ निर्देश देने की योजना बनाई कि वे बैठकों में किन-किन विषयों पर चर्चा करें, शुरू में वे किन-किन घरों पर जाएँ, इन बैठकों का रिकार्ड कैसे बनाएँ और बैठक के पश्चात अनुवर्ती क्रियाओं की योजना कैसे बनाएँ ।

- **टीकाकरण और स्वास्थ्य जाँच की तारीखें तय करना**

विजया जानती थी कि चिकित्सा अधिकारी (Medical Officer, M.O., एम.ओ.) – जो प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का प्रभारी है – के साथ एक बैठक जरूरी है ताकि यह पता चल सके कि टीकाकरण और स्वास्थ्य जाँच के लिए उनकी अनुसूची क्या है ? ऐसा करने से आई.सी.डी.एस. और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के काम में समन्वय लाया जा सकेगा । फिर आँगनवाड़ी कार्यकर्ता को स्वयं को व लाभार्थियों को उस तिथि पर तैयार रखना होगा, जो टीकाकरण व स्वास्थ्य जाँच के लिए उसके गाँव के लिए तय की गई है । विजया ने चिकित्सा अधिकारी से शीघ्रातिशीघ्र संपर्क करने का निश्चय किया ।

- **आँगनवाड़ियों में उपकरण की आपूर्ति**

सेवाएँ प्रारंभ करने के लिए, सभी आँगनवाड़ियों को उपकरण की आपूर्ति करने का उत्तरदायित्व सी.डी.पी.ओ. के ऊपर है । पर्यवेक्षक प्रत्येक केन्द्र को भेजी जाने वाली आपूर्तियों की सूची पहले ही तैयार कर लेते हैं । भाग 19.7 पढ़ने के बाद क्या आप इस सूची में शामिल वस्तुओं के नाम बता सकते हैं ?

....

....

- **पर्यवेक्षकों और आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ बैठकें निर्धारित करना**

विजया ने प्रत्येक महीने में दो बार पर्यवेक्षकों से और हर महीने में एक बार आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं से बैठक करने का प्रस्ताव रखा, जिनके दौरान वह उनके साथ इस विषय पर चर्चा कर सके कि उसने (विजया ने) आँगनवाड़ियों के अपने दौरे में क्या नोट किया। इन बैठकों के दौरान वह उनसे यह भी बातचीत करेगी कि विभिन्न सेवाएँ और बेहतर ढंग से कैसे प्रदान की जा सकती हैं ।

विजया ने पर्यवेक्षकों को याद दिलाया कि आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत की गई मासिक प्रगति रिपोर्टों का सारांश, प्रत्येक महीने की पहली तारीख तक कार्यक्रम अधिकारी (Programme Officer) को भेजा जाना जरूरी है ।

- **महिला मंडलों की रचना**

महिला मंडल, गाँव की स्त्रियों का एक समूह होता है । इस समूह की स्त्रियों को गाँव की अन्य स्त्रियों द्वारा चुना जाता है । महिला मंडल का उद्देश्य है, महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए कार्य करना । यह महिला मंडल गाँव की स्वच्छता संबंधी देखभाल व पानी के पंप का रखरखाव करती हैं । इसके अतिरिक्त, यह मंडल एक आय उत्पादक क्रिया शुरू कर सकता है और इसके लिए समूह की महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जा सकता है । बच्चे स्कूल आ रहे हैं या नहीं और उनको प्रतिरक्षी टीके लगाए गए हैं, आदि बातों का ध्यान भी इन मंडलों को रखना चाहिए । विजया ने आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को यह सिखाने का भी निर्णय किया कि वे अपने-अपने गाँवों में पर्यवेक्षकों की सहायता से महिला मंडल की रचना कैसे करें।

- **आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा रखे जाने वाले रिकार्डों की योजना बनाना**

आँगनवाड़ी कार्यकर्ता से कुछ मानक रजिस्टर भरने की अपेक्षा की जाती है। इनमें से कुछ तो प्रतिदिन भरने होते हैं, कुछ महीने में एक बार और कुछ को तीन महीनों में एक बार भरना होता है । क्या आपको उन दैनिक रिकार्डों के बारे में याद है, जिन्हें उत्तरा बाई भरती थी ? जी हाँ, वे थे :

- शालापूर्व क्रियाओं में भाग लेने वाले बच्चों का उपस्थिति रजिस्टर
- गर्भवती और स्तनपान करा रही माताओं के नामांकन का रजिस्टर, जिसमें उन्हें दी जा रही सेवाओं का ब्यौरा हो, जैसे उन्हें लौह तत्व व फोलिक अमल की गोलियाँ देने का ब्यौरा
- पूरक पोषण स्टाक संबंधी रजिस्टर
- घरों में किए गए दौरों का रजिस्टर
- दैनिकी

सप्ताह में एक बार जो रिकार्ड और रजिस्टर आँगनवाडी कार्यकर्ता को भरने पड़ते हैं, वे हैं :

- टीकाकरण संबंधी रजिस्टर
- स्वास्थ्य जाँच संबंधी रजिस्टर

आँगनवाड़ी कार्यकर्ता द्वारा महीने में एक बार भरे जाने वाले रिकार्ड व रजिस्टर हैं :

- वृद्धि चार्ट संबंधी रजिस्टर

  इसमें हर महीने बच्चों का वज़न, वृद्धि चार्टों पर आलेखित किया जाता है ।

- **मासिक प्रगति रिपोर्ट**

  इसमें गाँव की जनसंख्या, पैदा हुए बच्चों की संख्या, उस महीने में मरने वाले शिशुओं और माताओं की संख्या, शालापूर्व क्रियाओं में भाग लेने वाले बच्चों की संख्या, कुपोषण के चार ग्रेडों में से प्रत्येक ग्रेड में बच्चों की संख्या, जितने दिन पूरक भोजन दिया गया है, उनकी संख्या, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में भेजे गए बच्चों और माताओं की संख्या व सामने आई समस्याओं आदि की रिपोर्ट होती है ।

- **महिला मंडल/माताओं की बैठकों के रिकार्ड**

  इन रिकार्डों में आँगनवाड़ी कार्यकर्ता बैठक की तारीख, बैठक में आने वाले लोगों के नाम, लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय और अनुवर्ती कार्य के लिए बनाई गई योजना, आदि को नोट करती है ।

प्रत्येक तीन या छह महीनों में एक बार भरे जाने वाले रिकार्ड और रजिस्टर हैं :

- **सर्वेक्षण रजिस्टर**

  इसके बारे में आप भाग 19.7 में पढ़ चुके हैं ।

- **अर्द्ध-वार्षिक प्रगति रिपोर्ट**

  यह रिपोर्ट छह महीनों की मासिक रिपोर्टों के आँकड़ों का संकलन होती है । इन रिपोर्टों में केवल मात्रात्मक सूचना ही नहीं होती, बल्कि प्रदत्त सेवाओं की गुणवत्ता पर भी रिपोर्ट होती है ।

इनके अतिरिक्त, आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को जब और जैसे जरूरी हो, निम्नलिखित रिकार्ड भी भरने पड़ते हैं ।

- संदर्भ सेवाएँ रजिस्टर (Referral Services)
- प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स से दी गई दवाइयाँ
- आँगनवाड़ी को दिए गए सभी उपकरणों के लिए स्टॉक रजिस्टर

क्या आप बता सकते हैं कि इन तीन रजिस्टरों में किस तरह के आँकड़े भरा जाएगा ?

विजया ने सोचा कि एक विषय से संबंधित सूचनाओं के लिए कई रजिस्टर बनाने के स्थान पर उनका एक ही रजिस्टर बनाया जा सकता है । इस प्रकार उसने यह निर्णय लिया कि वह स्वास्थ्य से संबंधित रजिस्टरों को मिलाकर एक ही बना देगी, ताकि प्रत्येक बच्चे की स्वास्थ्य से संबंधित सूचना एक जगह पर ही उपलब्ध हो सके।

विजया को यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक कार्यकर्ता को ये सभी रजिस्टर दिए जाएँ । अब आपको यह तो पता ही है कि प्रत्येक रजिस्टर में क्या भरा जाना है, तो क्या आप बता सकते हैं कि राज्य स्तर पर इस सूचना का क्या किया जाता है ? इस बारे में और अधिक विस्तार से हम बाद में चर्चा करेंगे ।

- **प्राप्त करने वाले लक्ष्यों की योजना बनाना**

अंत में, अब हम विजया की योजना के सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग पर आते हैं, यह है – आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के उद्देश्यों के आधार पर यह निर्णय लेना कि कौन से लक्ष्य प्राप्त करने हैं। आई.सी.डी.एस. लक्ष्यों का मूल आधार है – भारत सरकार द्वारा देश के लिए योजनाबद्ध लक्ष्य । ये लक्ष्य हैं :

- बच्चों की मृत्युदर को घटाना
- माताओं की मृत्युदर घटाना
- गंभीर रूप से कुपोषित बच्चों की संख्या कम करना ताकि यह संख्या आधी रह जाए
- ''सभी के लिए शिक्षा'' के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्कूल नामांकनों में सुधार लाना

- बच्चों द्वारा स्कूल छोड़ने की दर को कम करना
- सभी गर्भवती माताओं का प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र पर प्रसव के लिए पंजीकरण या घर पर प्रशिक्षित दाइयों द्वारा प्रसव
- 90 प्रतिशत बच्चों और गर्भवती माताओं का टीकाकरण
- सभी बच्चों का नियमित वृद्धि अनुवीक्षण (निगरानी)

विजया को अपने उद्देश्यों की योजना इन्हीं राष्ट्रीय उद्देश्यों के अनुसार बनानी होगी । साथ ही उसको यह भी देखना होगा कि उसके परियोजना क्षेत्र में माताओं व बच्चों की स्थिति कैसी है । अपने सर्वेक्षण के आधार पर और समुदाय के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श करने से उसे ज्ञात हुआ था कि उसके क्षेत्र के बच्चे अक्सर अतिसार से ग्रस्त होते हैं, जिसके कारण कई मृत्यु का शिकार हो जाते हैं। असुरक्षित पेयजल के कारण बच्चे कृमियों से भी ग्रस्त हो जाते हैं । बहुत थोड़े बच्चों का ही संपूर्ण टीकाकरण हुआ है । विजया का लक्ष्य है, इन समस्याओं से निपटने के लिए विभिन्न चरणों में काम करना । उसकी पहली योजना है माताओं को निम्नलिखित के बारे में शिक्षित करना :

i) पीने के पानी को सुरक्षित बनाना

ii) अतिसार से ग्रस्त बच्चे की देखभाल करना

iii) अपने बच्चों का टीकाकरण करवाना

ऐसा करने के लिए उसे चिकित्सा अधिकारी से मिलना होगा । खंड विकास अधिकारी (Block Development Officer) की सहायता से उसे गाँवों में, जहाँ हैंडपंप नहीं है, वहाँ हैंडपंप लगवाने होंगे और उनकी देखभाल करने के लिए महिला मंडल के सदस्यों को प्रशिक्षित करना होगा । माताओं को शिक्षा देने के लिए उसने यह निर्णय लिया कि प्रत्येक कार्यकर्ता, एक महीने में दो बैठकें आयोजित करेगी । पर्यवेक्षकों को प्रत्येक गाँव की कम से कम एक बैठक में अवश्य उपस्थित रहना चाहिए । माताओं की इन बैठकों में, उन माताओं को खासतौर से बुलाना जरूरी है जिनके बच्चे अतिसार से ग्रस्त हैं या जिनके बच्चों का टीकाकरण नहीं की हुआ है/आंशिक टीकाकरण हुआ है। आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को इस बात पर भी बल देना होगा कि वे ग्रामवासियों को अपने गाँव को साफ रखने के लिए प्रेरित करें । इसके लिए समुदाय की बैठक आयोजित करने की आवश्यकता होगी और महिला मंडल को भी इसमें शामिल करना होगा ।

बोध प्रश्न 3

1) आई.सी.डी.एस. परियोजना के अन्तर्गत आने वाले रामपुर गाँव के बच्चों और स्त्रियों का वर्णन पढ़िए । पिछले भाग में सूचीबद्ध राष्ट्रीय उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, ऐसे पाँच उद्देश्यों की सूची बनाइए जिन्हें इस परियोजना के सी.डी.पी.ओ. अपनी आई.सी.डी.एस. परियोजना के लिए निर्धारित करेगी ।

   रामपुर एक जनजातीय क्षेत्र में स्थित एक गाँव हैं । रामपुर जाने के लिए आपको गढ़ी में स्थित खंड मुख्यालय से बस लेनी होगी । दो घंटे की यात्रा के बाद यह बस आपको माधोपुर गाँव पर छोड़ देगी। यहाँ से रामपुर पहुँचने के लिए आपको कम से कम 5-6 किलोमीटर और पैदल चलना पड़ेगा । रामपुर गाँव के बच्चे कुपोषित हैं । लगभग 10 बच्चे गंभीर कुपोषण की श्रेणी में हैं । पिछले एक वर्ष में जन्मे कुल बच्चों में से केवल दो को ही डी.पी.टी. का टीका और मुँह से दी जाने वाली पोलियो की दवाई की प्रथम खुराक दी गई है । गाँव में एक पारंपरिक दाई है जो सभी प्रसव कराती है । इन प्रसवों के दौरान, कभी बच्चों की तो कभी माताओं की, मृत्यु हो जाती है । यहाँ की अधिकांश स्त्रियाँ जंगल से लकड़ी इकट्ठी करने या खेतों में काम करने जातीं हैं । वे अपने बच्चों को अपने साथ, खेतों में ले जातीं हैं – जिन बच्चों का पंजीकरण आँगनवाड़ी में हो चुका है, वे भी अपनी माताओं के साथ खेतों में चले जाते हैं । गाँव की कोई भी लड़की स्कूल नहीं जाती ।

नीचे दिए गए स्थान में रामपुर के संदर्भ में प्राप्त किए जाने वाले उद्देश्यों की सूची बनाइए ।

i) ....

ii) ....

iii) ....

iv) ....

v) ....

19.9 पर्यवेक्षकों द्वारा बनाई गई योजना

सी.डी.पी.ओ. द्वारा पर्यवेक्षकों के साथ बनाई गई योजना के बाद, अब पर्यवेक्षकों की बारी है कि वे अपने सर्किल (मंडल) के लिए योजना बनाएँ। पर्यवेक्षकों की भूमिका है कि वे अपने सर्किल में आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा दी जा रही सेवाओं की निगरानी करें, उनकी कमियों का पता लगाएँ और इन सेवाओं को अधिक प्रभावी रूप से देने के लिए आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को सतत शिक्षा प्रदान करें । पर्यवेक्षक द्वारा निम्नलिखित की योजना बनाना आवश्यक है :

- उसके द्वारा आँगनवाड़ी के दौरे करने की योजना । प्रत्येक पर्यवेक्षक 20-25 आँगनवाड़ियों का प्रभारी होता/होती है । आँगनवाड़ियों का यह समूह सर्किल (मंडल) कहलाता है । पर्यवेक्षक को एक महीने में आँगनवाड़ियों के 20-25 दौरे करने होते हैं, जिसका मतलब है कि वह हर महीने, अपने मंडल की प्रत्येक आँगनवाड़ी का कम से कम एक बार दौरा तो करती ही है ।
- सतत शिक्षा प्रदान करने हेतु और मासिक प्रगति रिपोर्ट द्वारा सूचना एकत्र करने के लिए सर्किल की एक बैठक करना । अर्थात, उन सभी आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की बैठक बुलाना जो उसके सर्किल के अन्तर्गत आतीं हैं और जिनका उसे पर्यवेक्षण करना है ।
- विशिष्ट विषयों के संदर्भ में माताओं, महिला मंडलों और समुदाय की बैठकें कराना ।

कुछ आँगनवाड़ियाँ बस के रास्तों में ही पड़ती हैं; अर्थात ये गाँव मुख्य सड़क पर होते हैं और वहाँ आप बस से पहुँच सकते हैं । कुछ आँगनवाड़ियाँ राज्य के भीतरी हिस्सों में थोड़ी दूरी पर हैं, जबकि कुछ काफी अंदर जाकर हैं । इन तक पहुँचने के लिए ऊबड़-खाबड़ भू-भाग पर सामान्यत: कई किलोमीटर तक पैदल चलना पड़ता है । पर्यवेक्षकों को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि वे सभी केन्द्रों का दौरा करें; न कि केवल उनका जो मुख्य सड़क के समीप हैं । पर्यवेक्षकों को यह निर्णय करना पड़ेगा कि वे प्रतिदिन किस केन्द्र का दौरा करेंगे । उनकी योजना निम्नलिखित की भाँति होनी चाहिए ।

आँगनवाड़ी का नाम	दौरे की तिथि
1. मादीपुर	8.7.95
2. भोखरा गाँव	9.7.95 (रात को ठहरना)
3. उज्जीना	10.7.95 (भोखरा से वापसी के दौरान)

आँगनवाड़ी का अवलोकन करना

आँगनवाड़ी पहुँचने पर, पर्यवेक्षक आँगनवाड़ी कार्यकर्ता के कार्य तथा कार्य करने के तरीके का ध्यान से अवलोकन करती है। जब आँगनवाड़ी कार्यकर्ता शालापूर्व क्रियाएँ आयोजित करती है, तो पर्यवेक्षक उसका अवलोकन करती है। वह उसके साथ उन घरों के दौरे पर जाती है, जहाँ-जहाँ कार्यकर्ता को उस दिन जाना है। अगर उस दिन महिला मंडल की कोई बैठक आयोजित होने वाली हो, तो वह उसमें भी भाग लेती है। वह कार्यकर्ता को, बच्चों का वजन लेते हुए और वज़न लेने के बाद माताओं से बातें करते हुए ध्यान से देखती है। पर्यवेक्षक अपने अवलोकनों को नोट करती है और इस बात की जाँच करती है कि जो कुछ आँगनवाड़ी कार्यकर्ता द्वारा दैनिक डायरी में रिकार्ड किया जा रहा है, वह सही है या नहीं। उसने वहाँ जो अच्छी बातें देखी; उनके लिए वह कार्यकर्ता की प्रशंसा करती है और (जब आवश्यक हो) ऐसे तरीकों के बारे में चर्चा करती है जिनके द्वारा कार्य में सुधार लाए जा सकते हैं। वह आँगनवाड़ी कार्यकर्ता से अपने अवलोकनों के बारे में चर्चा करती है और सुधार के लिए सुझाव देती है।

आँगनवाड़ी पर प्रदर्शन करके दिखाना

अगर आँगनवाड़ी कार्यकर्ता किसी कार्य को सही ढंग से नहीं कर पाती, तो पर्यवेक्षक स्वयं उस क्रिया को करके दिखाती है। उदाहरणार्थ, जब जमीला नाम की एक पर्यवेक्षक उज्जीना में स्थित आँगनवाड़ी पहुँची, तो उसने देखा कि वहाँ की कार्यकर्ता बच्चों को कहानी सही ढंग से नहीं सुनी रही थी। कार्यकर्ता की आवाज़ में न तो कोई उतार-चढ़ाव था और न ही वह बच्चों को इस क्रिया में शामिल कर पा रही थी। अतः, जमीला ने स्वयं बच्चों को कहानी सुनाने का निर्णय लिया। कहानी सुनाते समय उसने इसको मनोरंजक बनाने के लिए, विभिन्न हाव-भावों और ध्वनियों का प्रयोग किया और इस तरह कार्यकर्ता को उस कहानी सुनाने का उपयुक्त तरीका व्यावहारिक रूप में दिखाया। क्या आप जमीला को कुछ ऐसे अन्य तरीकों के बारे में सुझाव दे सकते हैं जिनसे कहानी सुनाने की क्रिया को रुचिकर बनाया जा सकता है। DECE-1 की इकाई 25 में आप इनके बारे में पढ़ चुके हैं।

रिकार्डों और रजिस्टरों की जाँच करना

आँगनवाड़ियों के दौरों के दौरान पर्यवेक्षक, कार्यकर्ता द्वारा रखे गए रिकार्डों और रजिस्टरों को भी देखती है। उदाहरण के लिए, वह रजिस्टर में स्टाक प्रविष्टियों और बचे हुए राशन की मात्रा की जाँच करती है। फिर वह स्टोर में जाकर वास्तव में बचे हुए खाद्य राशन को देखती है और रजिस्टर में दी गई स्टाक प्रविष्टियों से उसकी तुलना करती है। वह वृद्धि अनुवीक्षण रजिस्टरों का भी मुआयना करती है और यह देखती है कि कार्यकर्ता बच्चों का वज़न सही व नियमित रूप से लिख रहे हैं या नहीं। वह यह भी जाँच करती है कि बच्चों का टीकाकरण पूर्ण रूप से हुआ है या नहीं। क्या आपको याद है कि पर्यवेक्षक इन रिकार्डों और रजिस्टरों में दी गई सूचना की समीक्षा करती है, और इसके आधार पर प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्यों की योजना बनाती है ? उदाहरण के लिए, जब जमीला ने कार्यकर्ता द्वारा बनाए उपस्थिति रिकार्ड की जाँच की, तो उसने देखा कि शालापूर्व क्रियाओं के लिए आने वाले बच्चों की संख्या केवल 20 थी, जबकि उपस्थित रजिस्टर में 40 बच्चों के नाम दर्ज किए गए थे। और ये 20 बच्चे भी प्रतिदिन नहीं आते थे। जमीला को बच्चों के न आने की वज़ह कार्यकर्ता की दैनिक डायरी में ही मिल गई। वह कार्यकर्ता रोज़ाना एक ही क्रिया कर रही थी। वह बच्चों को सीखाने के लिए किसी रुचिकर सहायक सामग्री या खेल के तरीके का प्रयोग नहीं करती थी। उसका ध्यान संख्याएँ और वर्णमाला पढ़ाने पर ही विशेष रूप से केन्द्रित था। जमीला ने यह महसूस किया कि इस कार्यकर्ता को विविध प्रकार की क्रियाएँ जानने की आवश्यकता है; उसे यह भी समझाने की आवश्यकता है कि खेल के माध्यम से बच्चों को कैसे सिखाया जा सकता है और किस प्रकार परिवेश में आसानी से उपलब्ध सामग्रियों का प्रयोग कर, क्रियाओं के लिए सहायक सामग्री बनाई जा सकती है। अतः, इस बारे में आँगनवाड़ी कार्यकर्ता/कार्यकर्ताओं को शिक्षित व प्रशिक्षित करना, जमीला के तात्कालिक उद्देश्यों में से एक उद्देश्य हो गया।

सतत शिक्षा का आयोजन करना

यदि पर्यवेक्षक यह देखती है कि कई आँगनवाड़ी कार्यकर्ता कोई क्रिया विशेष करने में असमर्थ हैं, जैसे कहानी सुनाने या वृद्धि चार्ट पर वज़न दर्ज करने, तो इन विषयों पर चर्चा करने के लिए वह एक सर्किल बैठक आयोजित करती है । इस बैठक में वह स्वयं ये क्रियाएँ करके दिखाती है और फिर कार्यकर्ताओं से उन कौशलों का अभ्यास करवाती है, ताकि वे उन्हें अच्छी तरह सीख जाएँ ।

समुदाय के साथ बैठक करना

पर्यवेक्षक घरों पर किए जाने वाले दौरों से संबंधित डायरी की जाँच करती है और कार्यकर्ता ने उस दिन जिन-जिन घरों में जाने की योजना बनाई है, उन घरों में कार्यकर्ता के साथ वह भी वहाँ जाती है । ऐसा करने से उसे गाँव के लोगों से मिलने का और उनसे आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के बारे में बातचीत करने का मौका मिलता है । इन अनौपचारिक चर्चाओं से उसे यह जानने में मदद मिलती है कि आँगनवाड़ी कार्यकर्ता उचित ढंग से सेवाएँ दे रहे हैं या नहीं । उसे यह भी पता चलता है कि आँगनवाड़ी कार्यकर्ता सही समय पर आँगनवाड़ी खोलती है या नहीं, वह बच्चों को सही मात्रा में भोजन देती है अथवा नहीं, और वह अपने रजिस्टर में जो कुछ लिखती है, वह वास्तव में वैसा करती भी है या नहीं । वह लोगों की स्वास्थ्य संबंधी या अन्य समस्याओं को भी नोट करती है और आँगनवाड़ी कार्यकर्ता को माताओं की/समुदाय की/महिला मंडल की अगली बैठकों के दौरान की जाने वाली चर्चा के विषय का चयन करने में भी सहायता करती है ।

19.10 समुदाय का सहयोग प्राप्त करना

आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के लिए समुदाय के लोगों का सहयोग प्राप्त करना आवश्यक है । जैसा कि आपने पढ़ा, समुदाय को एकदम प्रारंभ से ही शामिल कर लिया जाता है, जब सी.डी.पी.ओ. और पर्यवेक्षक लोगों से मिलते हैं और उन्हें कार्यक्रम के बारे में बताते हैं व उनसे आँगनवाड़ी कार्यकर्ता का चयन करने के लिए कहते हैं । अपने प्रशिक्षण से लौटने के बाद, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता भी समुदाय से निम्नलिखित माध्यम से मिलती है :

- समुदाय की बैठकें
- माताओं की बैठकें
- महिला मंडल की बैठकें
- घरों के दौरे
- गाँव के नल पर अनौपचारिक मुलाकात, धार्मिक समारोहों के दौरान मुलाकात
- जब माताएँ आँगनवाड़ी आतीं हैं

समुदाय को शामिल करना आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, क्योंकि अपने विकास के लिए लोगों को स्वयं ही उत्तरदायी होना चाहिए । उन्हें यह भी समझना चाहिए कि आई.सी.डी.एस. सेवाओं से बच्चों और स्त्रियों के उत्तरजीवित व विकास में मदद मिलती है। इसलिए, उन्हें आई.सी.डी.एस. को एक सरकारी कार्यक्रम नहीं समझना चाहिए, जहाँ वे मात्र प्राप्तकर्ता ही हैं और बदले में उन्हें कुछ देना न पड़े। इसके विपरीत, हालाँकि इस कार्यक्रम में उनसे धन के रूप में सहायता की आशा नहीं की जाती, परन्तु अन्य कई तरीकों से इस कार्यक्रम में शामिल होने की अपेक्षा की जाती है :

- अपने बच्चों को समय पर आँगनवाड़ी भेजना
- जिन दिनों टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच या वृद्धि अनुवीक्षण किया जाता है, उन दिनों आँगनवाड़ी कार्यकर्ता की आँगनवाड़ी चलाने में मदद करना
- समुदाय के अन्य लोगों व स्त्रियों से बातचीत करना

- सब्जियाँ, मसाले आदि जैसी खाद्य वस्तुएँ देकर बच्चों को दिए जा रहे पूरक पोषण में योगदान देना
- बच्चों की देखभाल करने के बेहतर तरीकों, उन्हें सही ढंग से खाना खिलाने, समय पर उनका टीकाकरण करवाने, उनके साथ खेलने, आदि के बारे में माताओं और अन्य स्त्रियों को शिक्षित करना
- खेल सामग्री एकत्र करने और आँगनवाड़ी पर उपलब्ध खेल उपकरणों की मरम्मत करने में सहायता देना

DECE-1 की इकाई 23 में आप परिवार और समुदाय को शामिल करने के बारे में काफी विस्तार से पढ़ चुके हैं । क्या आप उसकी विषय-वस्तु का सारांश बता सकते हैं ? ऊपर बताए गए विविध तरीकों के अलावा, क्या आप कुछ अन्य तरीकों के बारे में भी सोच सकते हैं, जिनके द्वारा समुदाय आँगनवाड़ी की क्रियाओं में भाग ले सकें । नीचे दिए गए खाली स्थान में कम से कम पाँच अन्य तरीकों की सूची बनाइए ।

....

....

....

....

....

बोध प्रश्न 4

1) कॉलम क को कॉलम ख से मिलाइए ।

	कॉलम 'क'		कॉलम 'ख'
i)	शालापूर्व उपस्थिति रजिस्टर	क)	बच्चों का वज़न और उनका वृद्धि पैटर्न
ii)	टीकाकरण रजिस्टर	ख)	पूरक आहार प्राप्त कर रही गर्भवती और स्तनपान कराने वाली स्त्रियाँ
iii)	वृद्धि चार्ट रजिस्टर	ग)	3-6 आयु वर्ग के बच्चे जो शालापूर्व क्रियाओं में भाग ले रहे हैं
iv)	गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए सेवाएँ	घ)	बच्चों और स्त्रियों की स्थिति
		ङ)	वे बच्चे व माताएँ जिनका टीकाकरण हो गया है व टीके का नाम
v)	सर्वेक्षण रजिस्टर	च)	राशन के स्टाक
vi)	खाद्य स्टाक रजिस्टर	छ)	समुदाय के लोगों की जनसंख्या और परिवार के ब्यौरे

2) रिक्त स्थान भरिए :

i) महिला मंडल बैठक के रजिस्टर में, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता रिकार्ड करती है ।

....

ii) दैनिक डायरी कार्यकर्ता के .... का रिकार्ड है ।

iii) खाद्य स्टाक रजिस्टर में निम्नलिखित का विस्तृत वर्णन शामिल होता है

....

....

iv) संदर्भ सेवाओं के रजिस्टर में यह लिखा जाता है कि :

....

....

....

19.11 एक आई.सी.डी.एस. परियोजना का बज़ट

अपनी परियोजना के लिए बजट तैयार करने और सेवाएँ प्रदान करने के लिए इस बजट से व्यय करने के लिए सी.डी.पी.ओ. ही उत्तरदायी होता/होती है । राज्य में आई.सी.डी.एस. के विभाग द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार ही सी.डी.पी.ओ. इस बजट की योजना बनाता/बनाती है । इसमें निम्नलिखित खर्च शामिल होते हैं ।

- कर्मचारियों का वेतन

  सी.डी.पी.ओ.

  सहायक सी.डी.पी.ओ.

  पर्यवेक्षक

  यह प्रत्येक राज्य में भिन्न-भिन्न होते हैं ।
- आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को मानदेय

  यह मानदेय आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के शिक्षात्मक स्तर और जितने वर्ष उन्होंने काम किया है, उस पर निर्भर करता है।
- सहायकों को मानदेय
- सचिवालय और अन्य कर्मचारियों का वेतन

  क्लर्क-टाइपिस्ट

  ड्राइवर

  चपरासी

  सांख्यिकीय सहायक
- आवर्ती व्यय, जिसमें वे खर्चे शामिल होते हैं जिन्हें बार-बार किया जाना है । ऐसे कुछ खर्चों की सूची नीचे दी जा रही है :
  - आँगनवाड़ी केन्द्रों के लिए आकस्मिकता राशि, अर्थात रजिस्टर व शालापूर्व क्रियाओं के लिए सामग्री आदि खरीदने के लिए धन
  - आँगनवाड़ी के उपकरणों के रखरखाव/प्रतिस्थापन के लिए राशि
  - आँगनवाड़ी केन्द्रों के किराए के लिए । अधिकांश आँगनवाड़ियाँ किराए पर लिए गए स्थान में स्थित होती हैं । किराए का भुगतान करने के लिए एक प्रावधान है जो शहरी, ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में व विभिन्न राज्यों में अलग-अलग है।
  - प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स के लिए दवाइयाँ
  - जीप चलाने के लिए पैट्रोल
  - सी.डी.पी.ओ. के कार्यालय के लिए लेखन सामग्री आदि खरीदने के लिए आकस्मिता राशि।

- अनावर्ती व्यय

  यह व्यय परियोजना के प्रारंभ में केवल एक बार की खरीद के लिए होता है । इसके द्वारा खरीदी जाने वाली वस्तुएँ ये हैं :

  - आँगनवाड़ी के लिए उपकरण जैसे खाना पकाने के बर्तन, प्लेटें, डिब्बे आदि ।
  - खंड कार्यालय के लिए फर्नीचर
  - फ्रिज
  - सी.डी.पी.ओ. के लिए जीप

प्रत्येक परियोजना का बजट, उस परियोजना की आँगनवाड़ियों की संख्या, आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायकों की संख्या व नए केन्द्र खोलने की आवश्यकता पर निर्भर करता है। सी.डी.पी.ओ. इन मदों के अन्तर्गत योजित बजट के अनुसार धन निकालता (ती) है और तब यह उसकी जिम्मेदारी होती है कि वह सुनिश्चित करें कि धन तदानुसार व्यय किया जा रहा है ।

आई.सी.डी.एस. बजट का एक बड़ा हिस्सा पूरक पोषण की खरीद के लिए होता है । यह व्यय अधिकतर राज्य विभाग या जिला स्तर पर ही किया जाता है, सी.डी.पी.ओ. द्वारा नहीं ।

आई.सी.डी.एस. परियोजना बजट का कुछ हिस्सा स्वास्थ्य कर्मचारियों और आधारिक संरचना के लिए होता है क्योंकि इस कार्यक्रम की लगभग चार सेवाएँ स्वास्थ्य आधारित ही हैं । क्या आप बता सकते हैं कि ये सेवाएँ कौन सी हैं ? यद्यपि यह धन आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम से ही आता है, परन्तु सी.डी.पी.ओ. इसको व्यय नहीं कर सकता और इसे स्वास्थ्य विभाग को दे दिया जाता है ।

19.12 अन्य सेक्टरों के कार्यक्रमों से आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम का संबंध

आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम सरकार के अन्य विभागों के कई दूसरे कार्यक्रमों के साथ मिलकर काम करता है । अंतः सैक्टर संबंध सुनिश्चित करता है कि समुदाय, परिवार, माताओं और बच्चों की सभी आवश्यकताओं की देखभाल हो रही है । **यह दृष्टिकोण 'बाल विकास का व्यापक उपागम' (comprehensive approach to child development) के नाम से जाना जाता है ।**

स्वास्थ्य सैक्टर के साथ संबंध

आई.सी.डी.एस. का जिन सैक्टरों के साथ संबंध है, उनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण है – स्वास्थ्य सैक्टर । स्वास्थ्य सेवाएँ, स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रदान की जातीं हैं ।

आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के साथ क्षेत्र स्तर के जो स्वास्थ्य कार्यकर्ता प्रत्यक्ष रूप से संबद्ध हैं, वे हैं :

- चिकित्सा अधिकारी (Medical Officer)
- महिला स्वास्थ्य विज़िटर (Lady Health Visitor)
- सहायक नर्स मिडवाइफ (Auxillary Nurse Midwife)
- प्रशिक्षित जन्म परिचर (Trained Birth Attendant)

आई.सी.डी.एस. द्वारा प्रदत स्वास्थ्य सेवाओं में टीकाकरण, बच्चों और गर्भवती माताओं और बच्चों के स्वास्थ्य की जाँच, बीमारी के दौरान देखभाल, जीवन रक्षक घोल (ओ.आर.एस.) के पैकेटों का वितरण, परिवार नियोजन आदि शामिल हैं । स्वास्थ्य कार्यकर्ता ये सेवाएँ आई.सी.डी.एस. कर्मचारियों की सहायता से प्रदान करते हैं । आँगनवाड़ियों में इन सेवाओं की व्यवस्था करने के लिए आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की मदद करते हैं ।

स्वास्थ्य सेवा नेटवर्क		आई.सी.डी.एस. से संबंध
प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र		
चिकित्सा अधिकारी	————	सी.डी.पी.ओ.
उप-केन्द्र		
महिला स्वास्थ्य विजिटर	————	पर्यवेक्षक
सहायक नर्स मिडवाइफ	————	आँगनवाड़ी कार्यकर्ता
प्रशिक्षित जन्म परिचर	————	सहायक

चित्र 19.3 : आई.सी.डी.एस. कर्मचारियों और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के बीच विविध स्तरों पर सहयोग

महीने में कम से कम एक बार सी.डी.पी.ओ. और चिकित्सा अधिकारी दोनों मिलकर अपने परियोजना क्षेत्र के दौरे पर अवश्य जाते हैं और कार्यकर्ताओं की संयुक्त बैठकें संचालित करते हैं, ताकि कार्यकर्ता आपस में मिलकर अपनी स्वास्थ्य क्रियाओं की योजना बना सकें ।

पर्यवेक्षक और महिला स्वास्थ्य विजिटर भी एक साथ समुदाय के सदस्यों से मिलने की योजना बनाते हैं, ताकि वे उनकी समस्याओं के बारे में जान सकें और जिन सेवाओं की आवश्यकता हो, वे उन्हें वे सेवाएँ प्रदान कर सकें ।

आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, टीकाकरण में और बीमार बच्चों और माताओं के घरों पर जाने में सहायक नर्स मिडवाइफ की मदद करती है । सहायक नर्स मिडवाइफ बच्चों का वज़न लेने के महत्व और टीकाकरण की आवश्यकता के बारे में माताओं को विश्वास दिलाने में या दस्त होने पर बच्चों को घर पर ही देखभाल किए जाने के बारे में माताओं को शिक्षा देने में, आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की मदद कर सकती है।

सहायक, प्रशिक्षित जन्म परिचर के साथ अंत:क्रिया करती है और उसके साथ उन माताओं के घर जाती है जिन्हें देखभाल की जरूरत है । आँगनवाड़ी कार्यकर्ता भी प्रशिक्षित जन्म परिचर की कई कामों में मदद लेती हैं, जैसे बच्चों की जन्म तिथि का रिकार्ड रखना, नवजात बच्चों का वजन लेना, वृद्धि चार्ट को भरना, बच्चे को कोलोस्ट्रोम (नवदुग्ध) देने के लाभों के बारे में माँ को शिक्षित करना, इत्यादि ।

आई.सी.डी.एस. और स्वास्थ्य विभाग, दोनों मिलकर क्षेत्र में पर्यावरण संबंधी स्वच्छता को सुनिश्चित करने की दिशा में भी काम करते हैं ।

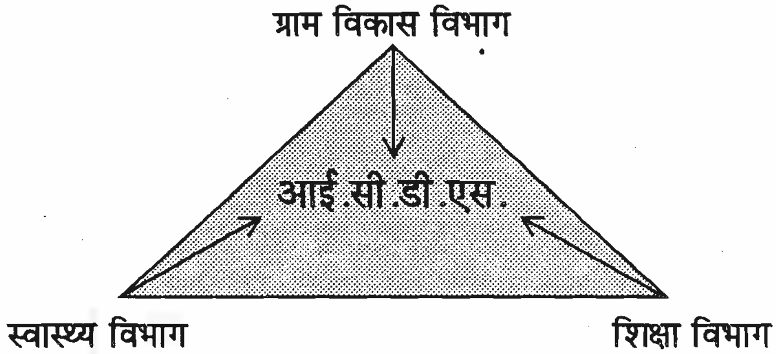
अन्य सैक्टरों के साथ संबंध

आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम का संबंध जिन अन्य सैक्टरों से हैं, वे हैं :

- **ग्राम विकास :** ग्राम विकास कार्यक्रम का क्षेत्र स्तर पर प्रबंध, जो कि मुख्यत: ग्राम विकास विभाग की जिम्मेदारी होती है, खंड विकास अधिकारी (Block Development Officer, BDO; बी.डी.ओ.) द्वारा किया जाता है । यह बी.डी.ओ. की जिम्मेदारी होती है कि वह सी.डी.पी.ओ. को प्रशासनिक कार्य के लिए कार्यालय उपलब्ध कराए, गाँवों में आँगनवाड़ी केन्द्रों के लिए जगह तलाशने में उसकी मदद करें और आँगनवाड़ी केन्द्र के लिए यदि समुदाय से सहायता न प्राप्त हो, तो आँगनवाड़ी केन्द्रों के निर्माण के लिए जवाहर रोज़गार योजना से निधि दिलवाएँ । बी.डी.ओ. महिला मंडलों को सुदृढ़ करने में और क्षेत्र के अन्य स्वयंसेवी संगठनों को आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने में मदद करते हैं । ग्रामवासियों को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने के लिए बी.डी.ओ. गाँवों में हैंडपंप लगवाते हैं और उनकी यह कोशिश होती है कि ये पंप आँगनवाड़ी केन्द्रों के पास लगाए जाएँ । गाँव तक आने वाली सड़कों के निर्माण और स्वच्छ शौचालयों व धूमरहित चूल्हों के प्रयोग को बढ़ावा

देना भी बी.डी.ओ. के कार्य का एक हिस्सा है । डी.डब्ल्यू सी.आर.ए. (DWCRA; डवाक्रार; ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों और बालकों का विकास) कार्यक्रम के अन्तर्गत, स्त्रियों के लिए आय उत्पादक कार्यक्रम शुरू किए जाते हैं, ताकि वे अधिक धन कमा सकें और अपनी रहन-सहन की स्थिति में सुधार ला सकें । आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम और ग्राम विकास के लिए कार्यक्रमों के अधीन दी जा रही सेवाओं को समन्वित करने के प्रयास किए जाते हैं।

- **शिक्षा :** शिक्षा विभाग अपने प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों द्वारा आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम में प्रौढ़ महिलाओं के लिए शिक्षा प्रदान करने में सहायता करता है । आँगनवाड़ी केन्द्र प्राथमिक स्कूलों से भी जुड़े हुए हैं, ताकि आँगनवाड़ी से निकले सभी बच्चे स्कूलों में प्रवेश प्राप्त कर सकें । प्राथमिक स्कूल के अध्यापक/अध्यापिका से यह अपेक्षा भी की जाती है कि वह आँगनवाड़ी कार्यकर्ता की बच्चों के लिए विविध क्रियाएँ आयोजित करने में सहायता करें ।



चित्र 19.4 : आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए एक अंत:क्षेत्रक उपागम अपनाया जाता है ।

19.13 आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम को सुदृढ़ बनाना

आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम को अब विश्व बैंक की सहायता से मज़बूत बनाया जा रहा है । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जो परिवर्तन किए जा रहे हैं, उनमें निम्नलिखित शामिल हैं :

- **किशोर लड़कियों को शामिल करना**

अभी तक सरकार के किसी भी कार्यक्रम में किशोर लड़कियों को शामिल नहीं किया था और न ही किसी कार्यक्रम के अन्तर्गत उन्हें कोई सेवाएँ प्राप्त हो रहीं थीं । गर्भवती और स्तनपान करा रही माताओं और छह वर्ष से कम आयु के बच्चों को आई.सी.डी.एस. कार्यक्रमद्वारा सेवाएँ प्रदान की जाती हैं । छह साल से बड़ी आयु के बच्चों की देखभाल स्कूलों में शिक्षा प्रणाली द्वारा हो जाती है । परन्तु वे किशोर लड़कियाँ जो स्कूल नहीं जातीं, प्राय: वे इन कार्यक्रमों से मिलने वाले लाभों से वंचित ही रह जाती हैं; अर्थात उन्हें कोई सेवा नहीं मिलती । उन्हें उचित पोषण नहीं मिलता और इस कारण उनकी वृद्धि ठीक से नहीं होती और उनका स्वास्थ्य खराब ही रहता है । परन्तु, अब आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के अन्तर्गत किशोर लड़कियों का आँगनवाड़ी केन्द्रों पर पंजीकरण किया जाता है और उन्हें पूरक आहार और अन्य सभी स्वास्थ्य देखभाल सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। इसके बदले में, वे आँगनवाड़ी कार्यकर्ता की क्रियाएँ आयोजित करने में मदद करती हैं । और ऐसा करते हुए वे बच्चों की देखभाल करने के उचित तरीके सीख जातीं हैं ।

इस योजना के अन्तर्गत, स्त्रियों को पढ़ाई, लिखाई और संख्या संबंधी मूलभूत कौशल सीखने का अवसर मिलता है । उन्हें यह जानकारी भी दी जाती है कि वे अपने स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा संबंधी आवश्यकताओं की देखभाल कैसे करें । शिक्षित आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को सरकार के प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत, इन महिलाओं को शिक्षित करने की जिम्मेदारी दी जाती है ।

- **आय उत्पादक क्रियाओं के लिए महिला मंडलों को सुदृढ़ बनाना**

प्रत्येक गाँव में गठित महिला मंडलों को प्रारंभ में 1000 रुपयों के अल्प-अनुदान के रूप में सहायता दी जाती है, जिसके सहारे वे गाँव की स्त्रियों के लिए आय उत्पादक क्रियाएँ शुरू कर सकें। सी.डी.पी.ओ. ऐसी क्रिया के चयन में जिसे स्त्रियाँ कर सकें, बेहतर गुणवत्ता की सामग्री के उत्पादन के लिए स्त्रियों को प्रशिक्षण देने में और इन उत्पादों को बेचने में महिला मंडल की सहायता करता/करती है। ऐसे महिला मंडलों को, जो आय उत्पादक क्रियाएँ शुरू करने में समर्थ हो जाते हैं, अधिक अनुदान दिया जाता है ताकि वे आय उत्पादन के अपने कार्य को और बढ़ा सकें।

19.14 आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम का मूल्यांकन

आई.सी.डी.एस. ऐसा कार्यक्रम है जो पूरे देश में फैला हुआ है। आपको याद होगा कि आज देश में इसकी 3000 से अधिक परियोजनाएँ हैं।

प्रभाव

आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम ने बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा के स्तर पर अच्छा प्रभाव डाला है। जिन-जिन क्षेत्रों में आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम चल रहा है, वहाँ-वहाँ अधिक बच्चों का टीकाकरण हुआ है, कुपोषण और रोगों से बच्चों के ग्रस्त होने की संख्या कम हुई है, शिशु मृत्यु दर भी कम हुई है, और आँगनवाड़ियों में अनौपचारिक शालापूर्व शिक्षा का अनुभव प्राप्त करके बच्चे अधिक संख्या में स्कूलों में नामांकन करवाते हैं।

कुछ समस्यापूर्ण क्षेत्र

आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम उस रूप से कार्यान्वित नहीं हो पाया है जैसा उसे होना चाहिए और उसे वांछित परिणाम नहीं प्राप्त हुए हैं। आइए, आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के कार्यान्वयन में आने वाली कुछ समस्याओं पर नज़र डालें।

- **लोग इसे एक सरकारी कार्यक्रम समझते हैं**

  जबकि यह तथ्य है कि समुदाय की सहभागिता आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण अंग है, समुदाय के लोग ऐसा मानते नहीं दिखाई पड़ते। अधिकांश लोग सोचते हैं कि आई.सी.डी.एस. एक सरकारी कार्यक्रम है और वे आँगनवाड़ी कार्यकर्ता की कोई सहायता करना पसंद नहीं करते। इसका कारण यह है कि परियोजनाओं को शुरू करने से पहले लोगों को सेवाओं की जानकारी नहीं दी जाती और उन्हें सेवाओं में योगदान देने के लिए तैयार नहीं किया जाता। दूसरा कारण यह है कि सी.डी.पी.ओ. व अन्य लोगों द्वारा लिए गए किसी भी निर्णय में उन्हें शामिल नहीं किया जाता। इसलिए वे स्वयं को उपेक्षित समझते हैं। वे कार्यकर्ता के साथ ऐसा बर्ताव शुरू कर देते हैं जैसे वह उनके समुदाय से बाहर की है और क्योंकि वह सरकारी कर्मचारी है, इसलिए उसे सभी काम स्वयं करना चाहिए। वे इस कार्यक्रम में बिल्कुल भी भाग नहीं लेते। दूसरी ओर, कार्यकर्ता भी ऐसा सोचती है कि गाँव के लोग उसके काम में हस्तक्षेप करते हैं और इसलिए वह भी उनकी सहायता लेने से बचना चाहती है। इसका परिणाम यह होता है कि एक ऐसा कार्यक्रम जो केवल जनता के लिए ही बनाया गया है, लोगों की सोच और काम करने के तरीके में स्थायी परिवर्तन लाने में विशेष सहायक सिद्ध नहीं हो पाता। और इस प्रकार एक ऐसा कार्यक्रम जिससे यह आशा की जाती है कि यह लोगों की जीवन शैली को बदल सकेगा, उनके स्वास्थ्य और पोषण स्तर में परिवर्तन ला सकेगा और बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायता कर सकेगा, आखिरकार बहुत अल्प प्रभाव छोड़ पाता है।

- **संबद्ध विभिन्न विभागों की विभिन्न सेवाओं के बीच समन्वय का अभाव**

  यद्यपि स्वास्थ्य, ग्राम विकास और शिक्षा जैसे विभिन्न विभागों से यह आशा की जाती है कि वे मिलकर काम करें, परन्तु कभी-कभी ऐसा नहीं हो पाता। प्रत्येक विभाग स्वतंत्र रूप से काम करता है और इसलिए इनकी सेवाएँ कोई प्रभाव नहीं छोड़ पातीं। उदाहरणार्थ, हो सकता है

स्वास्थ्य कार्यकर्ता स्वास्थ्य जाँच या टीकाकरण के लिए नियमित रूप से न जाएँ, सभी विभागों द्वारा एक साथ मिलकर दौरे न किए जाएँ, स्थान प्राप्त करने और आय उत्पादक क्रियाएँ आयोजित करने में बी.डी.ओ., सी.डी.पी.ओ. की सहायता न करे, आदि । इसका परिणाम यह होता है कि या तो सेवाएँ सही ढंग से नहीं दी जातीं या विभिन्न विभाग एक ही कार्य बार-बार करते हैं । अर्थात, ऐसा हो सकता है कि सी.डी.पी.ओ. तथा बी.डी.ओ. दोनों ही आय उत्पादन की ही क्रियाओं को बढ़ावा दे रहे हों ।

- **आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का निम्न शैक्षणिक स्तर**

  अंतस्थ क्षेत्रों से आने वाले आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की एक बड़ी संख्या वांछित स्तर तक शिक्षित नहीं होती । चूँकि आँगनवाड़ी कार्यकर्ता का चयन स्थानीय स्त्रियों में से ही करना होता है, इसलिए कभी-कभी ऐसी स्त्रियाँ भी नियुक्त की जाती हैं, जो निरक्षर या अर्ध-शिक्षित होतीं हैं । ऐसी स्त्रियों के लिए रिकार्डों को भरना और पढ़ने-लिखने की योग्यताओं से संबंद्ध क्रियाएँ कर पाना कठिन होता है । उन्हें प्रशिक्षण कार्यक्रम को समझने में भी कठिनाई होती है और वे उन बातों को नहीं सीख पातीं जो उन्हें सीखनी चाहिएँ । परिणामस्वरूप, बाद में वे सेवाओं को उचित रूप से प्रदान नहीं कर पातीं ।

- **आँगनवाड़ी कार्यकर्ता और अन्य आई.सी.डी.एस. कार्यकर्ताओं का निम्न स्तरीय उत्प्रेरण**

  सेवाओं को सही ढंग से प्रदान करने के लिए कार्यकर्ता पर्याप्त रूप से प्रेरित नहीं होता । चूँकि पर्यवेक्षक द्वारा नियमित रूप से कार्यकर्ता के कार्य का पर्यवेक्षण नहीं किया जाता, तो कार्यकर्ता अपने कामों को सही ढंग से करने में पर्याप्त रुचि नहीं लेती ।

  उसी प्रकार, पर्यवेक्षक भी आँगनवाड़ी जाने से बचना चाहते हैं क्योंकि वहाँ पहुँचना मुश्किल होता है, और वे आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के कौशलों में सुधार लाने की कोशिश नहीं करते ।

  परियोजना के प्रशासन में बहुत व्यस्त होने के कारण, सी.डी.पी.ओ. भी आँगनवाड़ियों के कार्य के पर्यवेक्षण के लिए और समुदाय से संपर्क बनाने के लिए पर्याप्त समय नहीं दे पाते ।

- **आँगनवाड़ियों के रिकार्डों और रजिस्टरों की जाँच पर अधिक बल दिया जाता है**

  पर्यवेक्षक और सी.डी.पी.ओ. दोनों ही आँगनवाड़ियों के रिकार्डों की जाँच से ज्यादा संबंध रखते हैं । वे निरीक्षक की तरह हो जाते हैं । वे इन रिकार्डों में दर्शायी गई जानकारी/आँकड़ों का विश्लेषण नहीं करते, और न ही यह प्रयास करते हैं कि सेवाओं को और बेहतर व प्रभावशाली किस तरह बनाया जा सकता है, ताकि लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके । रिकार्डों के आँकड़ों पर विशेष ध्यान देने की वजह यह है कि इन रिकार्डों के आँकड़ों को राज्य और केन्द्र के विभाग को भेजना होता है । इसके परिणामस्वरूप, कार्यक्रम की गुणवत्ता पर कम ध्यान दिया जाता है ।

- **आँगनवाड़ी केन्द्रों में अपर्याप्त स्थान**

  आँगनवाड़ी केन्द्र बहुत छोटे होते हैं और वहाँ 30 बच्चों के बैठने और क्रियाओं में भाग लेने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं होता । इसके अलावा, ज्यादातर आँगनवाड़ियों में बाहरी खेल क्रियाओं के आयोजन के लिए अच्छी खुली जगह नहीं होती । चूँकि आँगनवाड़ियाँ किराए पर लेने के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध नहीं होता, और जब मकान मालिक कम किराया लेना अस्वीकार कर देता है, तो कार्यकर्ता को अपना केन्द्र चलाने के लिए बार-बार ही कोई नई जगह तलाशनी पड़ती है । ऐसा विशेषकर शहरों में होता है । अनेकों केन्द्र कार्यकर्ताओं या सहायकों के घरों में ही चलाए जाते हैं । ऐसे मामले में, आँगनवाड़ी का कमरा रात में प्राय: सोने के लिए प्रयुक्त होता है । इसलिए, आँगनवाड़ी की सामग्री को रोज़ हटाकर बाहर रखा जाता है । अनेकों केन्द्र ऐसे हैं जो छोटे-छोटे अंधेरे कमरों में, बरामदों में, घरों के अंदर बने गलियारों (Passages) में चलाए जा रहे हैं । कई केन्द्र कच्चे भवनों में स्थित हैं, जहाँ बच्चों की वर्षा, गर्मी या सर्दी से सुरक्षा नहीं हो पाती । इन सभी कारणों से क्रियाएँ आयोजित करने में कठिनाई हो जाती है ।

- **क्रियाएँ आयोजित करने के लिए अपर्याप्त सामग्री**

  आँगनवाड़ियों को शालापूर्व शिक्षा से संबंधित क्रियाएँ आयोजित करने के लिए बहुत ही थोड़ी सामग्री प्राप्त होती है । जिस भी सामग्री की आपूर्ति होती है, वह बहुत थोड़ी मात्रा में होती है। यह सामग्री टिकाऊ नहीं होती और प्रयोग किए जाने पर आसानी से ही टूट जाती है । इसलिए, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता इस सामग्री को ताले में बद करके रखना बेहतर समझती है और इसे बच्चों को खेलने के लिए नहीं देती । आकस्मिकता राशि के अन्तर्गत प्राप्त थोड़ी सी धन-राशि तो सी.डी.पी.ओ. द्वारा रजिस्टर या बच्चों की व्यक्तिगत स्वच्छता के रखरखाव के लिए, साबुन और बाल्टी आदि खरीदने में ही खर्च कर दी जाती है । पेंट, कागज़ आदि खरीदने के लिए, जिनसे बच्चे क्रियाएँ कर सकते हैं, कुछ भी नहीं बचता ।

यद्यपि कार्यक्रम की कई समस्याएँ हैं, फिर भी इसने बच्चों के स्वास्थ्य और पोषणात्मक स्तर को ऊपर उठाने में मदद की है । आँगनवाड़ियों में आने वाले बच्चों में अपेक्षाकृत बहुत कम संख्या में बच्चे कुपोषण की तीसरी या चौथी श्रेणी में पाए जाते हैं । आई.सी.डी.एस. क्षेत्रों में माताओं और बच्चों – दोनों की ही मृत्यु दर में कमी हुई है । आई.सी.डी.एस. आँगनवाड़ियों से आए बच्चे प्राइमरी स्कूलों में प्रवेश लेते हैं और पढ़ाई में उन बच्चों से बेहतर होते हैं जिन्होंने आँगनवाड़ी का लाभ न उठाया हो । ये बच्चे स्कूल में काफी समय पढ़ाई जारी रखते हैं और अधिक (व्यापक) परिवर्तन लाने के लिए ऐसे कार्यक्रमों में अधिक प्रयास करने की जरूरत है जो लोगों के आय स्तरों, और शिक्षात्मक स्तरों को ऊपर उठा सकें । और अंत में, एक बात और – जब तक ज्यादा से ज्यादा प्रेरित लोग आई.सी.डी.एस. कार्यक्रमों में शामिल नहीं होंगे तब तक इसका प्रभाव पर्याप्त और दीर्घकालिक नहीं होगा ।

19.15 सारांश

हमारे देश के बच्चों के लिए आई.सी.डी.एस. स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा का सर्वाधिक व्यापक कार्यक्रम है । इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 3000 से अधिक परियोजनाएँ हैं । यह कार्यक्रम अपने लाभार्थियों को छह सेवाओं का एक समेकित पैकेज़ प्रदान करता है । इस कार्यक्रम के लाभार्थी 0-6 वर्षों की आयु वर्ग के बच्चे, गर्भवती और स्तनपान करा रही माताएँ और निम्न आय वर्ग की 15 से 45 वर्ष के बीच की स्त्रियाँ हैं । प्रदान की जा रही सेवाएँ हैं – पूरक पोषण, टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच, संदर्भ सेवाएँ, पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा और अनौपचारिक शालापूर्व शिक्षा । ये सेवाएँ कर्मचारियों के एक नेटवर्क द्वारा प्रदान की जातीं हैं । यह नेटवर्क जिला स्तर पर सी.डी.पी.ओ. से शुरू होता है, सर्किल स्तर पर पर्यवेक्षक और सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, ग्रामस्तर पर आँगनवाड़ी कार्यकर्ता व सहायक ।

आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम ग्राम विकास और स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों के साथ मिलकर कार्य करता है। बच्चों और महिलाओं के स्वास्थ्य, पोषण और शैक्षणिक स्तर पर आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम ने एक प्रभाव छोड़ा है, लेकिन कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ इसका कार्यान्वयन आशा के अनुरूप नहीं हुआ है । वहाँ अभी भी सुधार के लिए गुंजाइश है ।

19.16 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) (i) (ग) (ii) (घ)
   (iii) (ख) (iv) (क)

बोध प्रश्न 2

1) (iii), (v)

बोध प्रश्न 3

1) i) कुपोषित बच्चों के पोषणात्मक स्तर में सुधार लाने हेतु उन्हें पूरक पोषण देकर और माता-पिता, विशेष रूप से माताओं को, स्वास्थ्य व पोषण संबंधी शिक्षा देकर ।

ii) बच्चों का सही समय पर टीकाकरण ।

iii) सभी प्रसव प्रशिक्षित स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा करवाना । इसका पहला चरण है, पारंपरिक दाई को प्रशिक्षित करना।

iv) आँगनवाड़ी के समय में माताओं की सुविधानुसार परिवर्तन करना, उन्हें अपने बच्चों को आँगनवाड़ी भेजने के लिए प्रेरित करना ।

v) अपनी बेटियों को स्कूल भेजने के लिए माता-पिता को प्रोत्साहित करना ।

बोध प्रश्न 4

1) i) (ग)

iv) (ख)

ii) (च)

v) (ज), (घ)

iii) (क)

vi) (छ)

2) i) बैठक की तिथि, बैठक में उपस्थित हुए लोगों के नाम, लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय और नियोजित अनुवर्ती कार्य ।

ii) दिन के दौरान की गई क्रियाएँ ।

iii) प्राप्त और वितरित खाद्य राशन ।

iv) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र को भेजे गए बीमार बच्चों का रिकार्ड ।